हरिभूमि

सिरसा-फतेहाबाद भूमि

रोहतक, रविवार 14 जून 2026

11 पीएम के नेतृत्व में भारत ने विकास के नए कीर्तिमान किए स्थापित : बराला

12 जाखल-कुलां मार्ग पर लगाया 3 घंटे लंबा जाम

भीषण गर्मी में पानी का शेड्यूल बिगड़ा, शहर को फिर याद आए 33 ट्यूबवेल

वाटर ट्रीटमेंट प्लांट में वाल्व लीकेज बनी नासूर, 70,000 की आबादी पानी को तरसी

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

जिले में पड़ रही भीषण गर्मी के साथ पेयजल संकट भी गहराने लगा है। लगातार बढ़ते तापमान और पानी की बढ़ती मांग के बीच खैरातीखेड़ा रोड स्थित 22 एमएलडी क्षमता वाले वाटर ट्रीटमेंट प्लांट में उपलब्ध जल भंडार तेजी से कम हो रहा है। हालांकि प्लांट में पर्याप्त संग्रहण क्षमता है, लेकिन मौजूदा परिस्थितियों में केवल कुछ दिनों का ही पानी शेष रहने की बात सामने आ रही है। ऐसे में शहर की पुरानी ट्यूबवेल आधारित जलापूर्ति व्यवस्था एक बार फिर लोगों के बीच चर्चा का विषय बन गई है। दरअसल प्लांट में ही वाल्व वाली जगह पर प्रतिदिन लीकेज होने के कारण शहर में पर्याप्त पानी सप्लाई नहीं हो रहा। वॉल्व में लीकेज ठीक होने का नाम नहीं ले रही। ऐसा नहीं है कि कर्मचारी प्रयास नहीं करते। यही कारण है कि 70 हजार की आबादी पानी को तरस जाती है। वाल्व की खराबी के चलते पेयजल सप्लाई का भी शेड्यूल बिगड़ गया है। पहले जहां शहर में पेयजल सप्लाई का समय निश्चित था लेकिन अब प्रतिदिन अलग-अलग समय पेयजल सप्लाई हो रहा है। कई दिन तो ऐसे होते हैं जब पूरा दिन ही पानी नहीं आता। करीब दस वर्ष पहले तक फतेहाबाद शहर की प्यास 33 सरकारी ट्यूबवेल बुझाते थे। शहर के विभिन्न वार्डों और प्रमुख स्थानों पर स्थापित इन ट्यूबवेलों के माध्यम से लोगों के घरों तक पेयजल पहुंचाया जाता था।

फतेहाबाद। डब्ल्यूटीपी में वाल्व ठीक करते कर्मचारी।

फतेहाबाद। खैरातीखेड़ा रोड स्थित वाटर ट्रीटमेंट प्लांट एवं संन्यास आश्रम रोड पर बंद पड़ा सरकारी ट्यूबवेल।

ट्यूबवेल अभी भी चालू : एसडीओ

जनस्वास्थ्य विभाग के एसडीओ सतपाल रोज ने बताया कि पहले शहर में ट्यूबवेलों के माध्यम से पानी की आपूर्ति होती थी, लेकिन नहरी पानी व्यवस्था लागू होने के बाद कई ट्यूबवेल बंद कर दिए गए। वर्तमान में करीब 17 ट्यूबवेल चालू हालत में हैं और कुछ क्षेत्रों में इनसे पानी की सप्लाई की जा रही है। उन्होंने कहा कि कई पुराने ट्यूबवेल तकनीकी खराबी और अधिक रखरखाव खर्च के कारण बंद पड़े हैं। विभाग स्थिति पर लगातार नजर बनाए हुए है और जलापूर्ति को सामान्य बनाए रखने के प्रयास किए जा रहे हैं।

कई पुराने ट्यूबवेल रखरखाव के कारण बंद

शहर के कई पुराने ट्यूबवेल आज रखरखाव के अभाव में बंद पड़े हैं। कहीं मशीनें खराब हो चुकी हैं तो कहीं ढांचे जर्जर अवस्था में पहुंच गए हैं। जानकारों का मानना है कि यदि समय-समय पर इनकी देखरेख की जाती रहती तो वर्तमान संकट के दौरान इन्हें वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में प्रभावी ढंग से इस्तेमाल किया जा सकता था।

करोड़ों रुपये खर्च, फिर भी नहीं सुधरे शहर के हालात

स्ट्रॉर्म वाटर पाइप लाइन से गड्ढों में तब्दील हुआ शहर, धंस रहे वाहन

हरिभूमि न्यूज ⏭ सिरसा

करोड़ों रुपये खर्च करने के बाद भी शहर के हालात नहीं सुधरे। शुक्रवार रात हुई 28 एमएम बरसात से शहर की सडक़ें व गलियां जलमग्न हो गई। स्टॉर्म वाटर लाइनों की बदहाली ने इस आफत को और भयावह बना दिया। नई स्टॉर्म वाटर लाइन के बिछने से गड्ढों में तबदील हुआ शहर के अनेक स्थानों पर ट्रैक्टर, कार, स्कूटर, बाइक धंसने का साक्षी बना। शहर की गलियां, बाजार और रिहायशी इलाके पानी में डूबे नजर आए। शनिवार दोपहर तक सडक़ों पर पानी जमा रहा और लोग प्रशासन को कोसते नजर आए। स्टार्म वाटर प्रोजेक्ट पर करीब 75 करोड़ रुपये से अधिक खर्च किए जा चुके हैं। शहर के मुख्य बाजार, शिव चौक, रेलवे स्टेशन रोड, जनता भवन रोड, हिसार रोड, मॉडल टाउन और पुराने शहर के कई हिस्सों में 1-2 फीट तक पानी जमा हो गया। यहां तक की कई घरों में भी पानी घुस गया। कई जगहों पर वाहन फंस गए, दुकानें बंद रहीं और लोगों को घरों से निकलना मुश्किल हो गया। कई जगहों पर बिजली आपूर्ति भी बाधित हुई।

बरसाती नालों की सफाई का ठेका

नगर परिषद द्वारा डबवाली रोड के दोनों ओर बने बरसाती नालों की सफाई का ठेका दिया गया। ठेकेदार द्वारा रचना पैलेस से लेकर अरोड़वंश चौक तक नालों की सफाई करने की औपचारिकता भी निभाई। प्री-मानसून की पहली बारिश में सडक़ के दोनों ओर के बरसाती नालों ओवरफ्लो हो गए और गंदा पानी सडक़ पर आ गया। ईओ निवास के आगे भी बरसाती नाला ओवरफ्लो की स्थिति में है? बरसाती नालों की सफाई पर लाखों खर्च करने के बाद भी हालात में बदलाव क्यों नहीं आया? डबवाली रोड पर रचना पैलेस के निकट पहले भी पानी का ठहराव रहता था, आज भी है। हकीकत तो यह है कि अरोड़वंश चौक से सांगवान चौक तक सड़क के दोनों ओर बरसाती नालों की कभी सफाई की ही नहीं गई, जबकि नगर परिषद हर साल बरसाती नाले की सफाई की एवज में लाखों का बिल का भुगतान करती है।

शहरवासियों की मांग

शहरवासियों की मांग की है कि पुरानी स्टॉर्म वाटर लाइन का तुरंत आधुनिकीकरण किया जाए। इन लाइनों की नियमित सफाई और डिसिल्टिंग की व्यवस्था की जाए तथा अवैध निर्माणों पर कार्रवाई की जाए। यह पहली बारिश शहर के लिए एक बड़ी चेतावनी है। अगर समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए गए तो आगे आने वाली भारी बारिशों में स्थिति और विकट हो सकती है।

सिरसा। बरसात के बाद बाजार में हुआ जलभराव तथा स्टॉर्म वाटर के लिए डाली गई पाइप लाइन में धंसी कार।

कांग्रेस ने प्रोजेक्ट पर उठाए सवाल

प्रदेश कांग्रेस प्रतिनिधि राजकुमार शर्मा ने कहा कि प्री-मानसून की पहली बारिश ने ही शहर की व्यवस्थाओं की पोल खोलकर रख दी। बारिश के बाद शहर में कई जगह जलभराव की स्थिति पैदा हो गई, जिससे आमजन, दुकानदारों और वाहन चालकों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ा। शर्मा ने कहा कि शहर में चल रहे स्टॉर्म वाटर प्रोजेक्ट के तहत जिन सडक़ों की खुदाई की गई थी, उन्हें सही तरीके से नहीं भरा गया। पहली ही बारिश के बाद कई स्थानों पर मिट्टी धंस गई और सडक़ें खतरनाक बन गई। शहीद जगदेव सिंह चौक से लेकर सुभाष चौक तक अनेक स्थानों पर वाहन सडक़ में धंसते नजर आए, जिससे यातायात भी प्रभावित हुआ। उन्होंने कहा कि जलभराव और टूटी सडक़ों के कारण बाजारों में ग्राहकों की आवाजाही कम होने से व्यापारियों का कामकाज लगभग ठप हो गया है। दुकानदारों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है, जबकि आम नागरिकों को भी आने जाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। कांग्रेस नेता ने कहा कि स्टॉर्म वाटर प्रोजेक्ट का हाल भी पहले आए स्टॉर्म वाटर प्रोजेक्ट-1 जैसा ही होने वाला है। उन्होंने कहा कि जब प्रोजेक्ट-1 शुरू किया गया था, तब बड़े-बड़े दावे किए गए थे कि शहर में एक बूंद पानी भी खड़ा नहीं होगा। लेकिन वास्तविकता यह है कि प्रोजेक्ट पर करोड़ों रुपये खर्च होने के बावजूद पहली ही बारिश में शहर जलमग्न हो गया।उन्होंने प्रशासन से मांग की कि परियोजना के कार्यों की गुणवत्ता की जांच करवाई जाए तथा जहां-जहां सडक़ें धंसी हैं और जलभराव की समस्या है, वहां तत्काल प्रभाव से सुधारात्मक कदम उठाए जाएं।

जमीन विवाद में फायरिंग व मारपीट के आरोप में पिता-पुत्र काबू

फतेहाबाद। जमीन विवाद को लेकर हुए झगड़े, जानलेवा हमले और फायरिंग के मामले में थाना सदर टोहाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपी रिश्ते में पिता-पुत्र हैं। थाना प्रभारी निरीक्षक वीर सिंह ने बताया कि जिला जींद के गांव खरड़वाल निवासी सोनू उर्फ मोनू पुत्र रामप्रताप ने पुलिस को इस संबंध में शिकायत दर्ज करवाई थी। शिकायतकर्ता सोनू ने बताया कि उसने करीब एक साल पहले जमालपुर शेखां के इलाके में एक कनाल जमीन खरीदी थी। इस जमीन को लेकर उसका दूसरे पक्ष के साथ विवाद चल रहा है। बीती 11 जून को सोनू अपने कुछ साथियों के साथ इस विवादित जमीन पर गया था। आरोप है कि इसी दौरान दूसरे पक्ष के लोगों ने उन पर अचानक हमला कर दिया।

पुलिस ने लाखों की हेरोइन के साथ युवक को दबोचा

फतेहाबाद। नशा तस्करों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत थाना सदर फतेहाबाद पुलिस ने एक युवक को हेरोइन सहित पकड़ा है। पुलिस टीम ने मुस्तैदी दिखाते हुए बाल्मीकी चौक बगीची मोहल्ला निवासी आर्यन को 34.09 ग्राम हेरोइन के साथ गिरफ्तार कर उससे पूछताछ शुरू कर दी है। थाना सदर फतेहाबाद के प्रभारी निरीक्षक प्रहलाद ने बताया कि पुलिस टीम अपराध रोकथाम और गश्त के दौरान गांव दौलतपुर के पास मौजूद थी। इसी दौरान सामने से आ रहा एक स्कूटी सवार युवक पुलिस की गाड़ी को देखकर घबरा गया और संदिग्ध परिस्थितियों में अपनी स्कूटी को मोड़कर वापस भागने का प्रयास करने लगा। युवक की इस हरकत पर संदेह होने पर पुलिस ने उसे काबू कर लिया।

महंगाई व टैक्स के दौर में

एफडी क्या सचमुच बढ़ा रही है बचत

तैयारी
बिजनेस डेस्क

खास बातें

1. 5 प्रतिशत महंगाई के बीच एफडी कैसे बन रहा है सीमित कमाई का साधन
2. विशेषज्ञों ने दी निवेश की रणनीति बदलने की सलाह
3. सुरक्षित निवेश तो है, लेकिन लंबी अवधि में संपत्ति निर्माण के लिए अकेली एफडी काफी नहीं

फिक्स्ड डिपॉजिट आज भी पूंजी की सुरक्षा और स्थिर आय के लिए एक मजबूत विकल्प है, लेकिन केवल एफडी के भरोसे लंबी अवधि में बड़ी संपत्ति बनाना आसान नहीं है। महंगाई और टैक्स मिलकर इसके वास्तविक रिटर्न को काफी कम कर सकते हैं। इसलिए निवेशकों को अपनी जरूरत, लक्ष्य और जोखिम क्षमता के अनुसार एफडी के साथ अन्य निवेश विकल्पों का संतुलित उपयोग करना चाहिए। आखिरकार निवेश की असली सफलता बैंक बैलेंस बढ़ने में नहीं, बल्कि समय के साथ आपकी क्रय शक्ति बढ़ने में छिपी होती है।

भारत में फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) को लंबे समय से सुरक्षित और भरोसेमंद निवेश का प्रतीक माना जाता रहा है। निश्चित ब्याज, पूंजी की सुरक्षा और आसान प्रक्रिया के कारण लाखों निवेशक अपनी बचत एफडी में लगाते हैं। लेकिन बदलते आर्थिक माहौल में केवल ब्याज दर को देखकर निवेश का आकलन करना पर्याप्त नहीं रह गया है। विशेषज्ञों का मानना है कि किसी भी निवेश की वास्तविक सफलता इस बात से तय होती है कि वह महंगाई और करों का असर झेलने के बाद निवेशक की क्रय शक्ति को कितना बढ़ा पाता है। यदि एफडी पर मिलने वाला रिटर्न महंगाई दर के बराबर या उससे कम है, तो खाते में रकम बढ़ने के बावजूद वास्तविक लाभ सीमित रह जाता है। खासकर उच्च आयकर स्लैब वाले निवेशकों के लिए टैक्स कटने के बाद एफडी का रिटर्न और कम हो जाता है। ऐसे में यह सवाल महत्वपूर्ण हो गया है कि क्या एफडी केवल धन सुरक्षित रखने का साधन है या फिर वास्तव में संपत्ति निर्माण का भी प्रभावी माध्यम है।

पूंजी सुरक्षा के लिए बेहतर, लेकिन वेल्थ क्रिएशन के लिए जरूरी है विविध निवेश रणनीति

महंगाई क्यों कम कर देती है

- मान लीजिए किसी निवेशक को एफडी पर 6 प्रतिशत ब्याज मिलता है और उसी अवधि में महंगाई दर 5 प्रतिशत रहती है। ऐसे में निवेशक का वास्तविक लाभ केवल 1 प्रतिशत के आसपास रह जाता है।
- वित्तीय सलाहकार इसी कारण ₹रियल रिटर्न₹ पर जोर देते हैं। रियल रिटर्न का अर्थ है निवेश से मिलने वाला वास्तविक लाभ, जो महंगाई घटाने के बाद बचता है।
- रियल रिटर्न = निवेश पर रिटर्न – महंगाई दर
- यदि एफडी का ब्याज 4.9 प्रतिशत और महंगाई 5 प्रतिशत है, तो निवेशक की क्रय शक्ति बढ़ने के बजाय घट भी सकती है।

एसबीआई की एफडी दरें क्या बताती हैं?

- 5 प्रतिशत महंगाई को आधार मानें तो छह महीने तक की छोटी अवधि वाली कई एफडी योजनाएं महंगाई को मात देने में संघर्ष करती दिखाई देती हैं। इन पर मिलने वाला ब्याज 3.05 प्रतिशत से 4.9 प्रतिशत के बीच है।
- हालांकि 1 से 3 वर्ष की अवधि वाली एफडी अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति में हैं। इस अवधि में एसबीआई करीब 6.25 से 6.4 प्रतिशत तक ब्याज दे रहा है, जिससे वास्तविक रिटर्न लगभग 1.25 से 1.4 प्रतिशत तक पहुंचता है। दिलचस्प बात यह है कि 5 से 10 वर्ष तक की लंबी अवधि की एफडी में भी महंगाई के बाद वास्तविक लाभ बहुत अधिक नहीं बढ़ता। यानी केवल लंबी अवधि के लिए पैसा लॉक करने से बड़ा लाभ मिलने की गारंटी नहीं है।

टैक्स के बाद और घट जाता है रिटर्न

महंगाई के अलावा टैक्स भी एफडी निवेशकों की कमाई को प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए 6.4 प्रतिशत ब्याज वाली एफडी पर।

- शून्य टैक्स स्लैब में रिटर्नः 6.4%
- 20% टैक्स स्लैब में रिटर्नः 5.12%
- 30% टैक्स स्लैब में रिटर्नः 4.48%
- यानी 30 प्रतिशत टैक्स स्लैब वाले निवेशक के लिए 6.4 प्रतिशत का ब्याज प्रभावी रूप से 4.48 प्रतिशत रह जाता है, जो 5 प्रतिशत महंगाई से भी कम है। ऐसे में वास्तविक रिटर्न नकारात्मक हो सकता है।

लिक्विड फंड बन सकते हैं विकल्प

कम अवधि के निवेश के लिए लिक्विड फंड भी निवेशकों के बीच लोकप्रिय हो रहे हैं। उदाहरण के तौर पर, एक प्रमुख लिक्विड फंड ने पिछले एक वर्ष में 6.29 प्रतिशत रिटर्न दिया, जो अधिकांश एफडी योजनाओं के बराबर या उनसे बेहतर रहा। हालांकि एफडी की तरह लिक्विड फंड में रिटर्न की गारंटी नहीं होती। ये बाजार से जुड़े होते हैं और समय के साथ इनमें उतार-चढ़ाव संभव है।

फिर भी एफडी क्यों है पसंदीदा?

एफडी की लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण इसकी सुरक्षा और निश्चितता है। निवेशक को पहले से पता होता है कि उसे कब और कितना पैसा मिलेगा। एफडी विशेष रूप से इन लोगों के लिए उपयुक्त मानी जाती हैः

- सेवानिवृत्त व्यक्ति
- आपातकालीन फंड रखने वाले निवेशक
- 1 से 3 वर्ष के लक्ष्यों के लिए बचत करने वाले लोग
- कम जोखिम पसंद करने वाले निवेशक

कौन-कौन से विकल्प उपलब्ध हैं?

- बेहतर महंगाई-समायोजित रिटर्न की तलाश करने वाले निवेशक अपनी जोखिम क्षमता के अनुसार निम्न विकल्पों पर विचार कर सकते हैं। ■ लिक्विड फंड
- मनी मार्केट और शॉर्ट ड्यूरेशन डेट फंड
- आरबीआई फ्लोटिंग रेट सेविंग्स बॉन्ड
- लंबी अवधि के लिए इक्विटी म्यूचुअल फंड

हर महिला को जरूर अपनानी चाहिए ये 5 वेल्थ मैनेजमेंट टिप्स

बिजनेस डेस्क

आज की महिलाएं सिर्फ परिवार और करियर की जिम्मेदारियां ही नहीं निभा रहीं, बल्कि आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने की दिशा में भी तेजी से आगे बढ़ रही हैं। बदलते दौर में वित्तीय सुरक्षा और संपत्ति निर्माण महिलाओं की प्राथमिकताओं में शामिल हो चुका है। हालांकि, कई महिलाएं अभी भी निवेश, बीमा और रिटायरमेंट प्लानिंग जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे पातीं, जिससे भविष्य में आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि सही वित्तीय योजना और अनुशासित निवेश के जरिए महिलाएं न केवल अपने वर्तमान को सुरक्षित बना सकती हैं, बल्कि आने वाले वर्षों के लिए मजबूत आर्थिक आधार भी तैयार कर सकती हैं। नियमित निवेश, आपातकालीन फंड, पर्याप्त बीमा और वित्तीय निर्णयों में सक्रिय भागीदारी जैसे कदम महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाते हैं। आइए जानते हैं ऐसी पांच महत्वपूर्ण वेल्थ मैनेजमेंट टिप्स, जिन्हें अपनाकर महिलाएं अपने भविष्य को अधिक सुरक्षित और समृद्ध बना सकती हैं।

निवेश को करें ऑटोमेटिक

नियमित निवेश की आदत बनाने का सबसे आसान तरीका है निवेश को ऑटोमेट करना। इसके लिए सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) या फिर आरडी में निवेश कर सकते हैं और हर महीने नियमित निवेश कर सकते हैं। ऑटोमैटिक निवेश की सुविधा से करियर में बदलाव या आय में उतार-चढ़ाव के दौरान भी निवेश जारी रहता है। इससे समय के साथ कंपाउंडिंग का लाभ मिलता है और बिना ज्यादा निगरानी के अच्छी संपत्ति बनाई जा सकती है।

रिटायरमेंट के लिए अलग फंड बनाएं

रिटायरमेंट प्लानिंग को टालना भविष्य में आर्थिक परेशानी का कारण बन सकता है। ऐसे में करियर की शुरुआत से ही आय का एक हिस्सा रिटायरमेंट फंड के लिए अलग रखना चाहिए। इसके साथ ही बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य संबंधी खर्च और अन्य दीर्घकालिक लक्ष्यों के लिए भी अलग निवेश योजना बनाना फायदेमंद रहता है। समय-समय पर इन निवेशों की समीक्षा करना भी जरूरी है।

अपने फैसले खुद लें

आर्थिक आत्मनिर्भरता का मतलब सिर्फ कमाई करना नहीं, बल्कि अपने पैसों से जुड़े फैसले खुद लेना भी है। महिलाओं को निवेश, बचत, बीमा और टैक्स प्लानिंग जैसे विषयों की बुनियादी जानकारी रखनी चाहिए। जब आप अपने वित्तीय मामलों में सक्रिय भूमिका निभाती हैं, तो आत्मविश्वास बढ़ता है और महत्वपूर्ण आर्थिक निर्णयों के लिए दूसरों पर निर्भरता कम होती है।

वित्तीय फैसलों की जिम्मेदारी खुद लें

आर्थिक आत्मनिर्भरता का मतलब सिर्फ कमाई करना नहीं, बल्कि अपने पैसों से जुड़े फैसले खुद लेना भी है। महिलाओं को निवेश, बचत, बीमा और टैक्स प्लानिंग जैसे विषयों की बुनियादी जानकारी रखनी चाहिए। जब आप अपने वित्तीय मामलों में सक्रिय भूमिका निभाती हैं, तो आत्मविश्वास बढ़ता है और महत्वपूर्ण आर्थिक निर्णयों के लिए दूसरों पर निर्भरता कम होती है।

मजबूत इमरजेंसी फंड तैयार करें

जीवन में कब कौन सी चुनौती सामने आ जाए, इसका अनुमान लगाना मुश्किल है। नौकरी छूटना, स्वास्थ्य संबंधी समस्या या कोई अन्य अप्रत्याशित खर्च आर्थिक स्थिति को प्रभावित कर सकते हैं। ऐसे समय में इमरजेंसी फंड और पर्याप्त बीमा कवरेज ही काम आता है।

ईपीएफ का छिपा फायदा

8.25% ब्याज, लेकिन असली रिटर्न 11.8%

विशेषज्ञों का मानना है कि ईपीएफ केवल बचत का माध्यम नहीं, बल्कि रिटायरमेंट योजना की रीढ़ है। नियमित योगदान, चक्रवृद्धि ब्याज का लाभ, कर छूट और सरकारी निगरानी इसे एक भरोसेमंद निवेश बनाती है। यदि कर्मचारी नौकरी के शुरुआती वर्षों से ही ईपीएफ को गंभीरता से लें और बीच में निकासी से बचें, तो रिटायरमेंट तक एक बड़ा कोष तैयार किया जा सकता है।

तैयारी
बिजनेस डेस्क

भारत में नौकरीपेशा लोगों के लिए कर्मचारी भविष्य निधि (ईपीएफ) लंबे समय से रिटायरमेंट बचत का एक भरोसेमंद माध्यम रहा है। हर महीने वेतन से कटने वाली राशि और उस पर मिलने वाला ब्याज कर्मचारियों को भविष्य के लिए आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है। हालांकि कई लोग ईपीएफ को केवल एक अनिवार्य बचत योजना मानते हैं और इसकी तुलना म्यूचुअल फंड, शेयर बाजार या अन्य निवेश विकल्पों से करते हुए इसे कम रिटर्न वाला निवेश समझ बैठते हैं। लेकिन वित्तीय विशेषज्ञों का कहना है कि ईपीएफ की वास्तविक ताकत केवल इसकी घोषित ब्याज दर में नहीं, बल्कि इसके साथ मिलने वाले कर लाभ और पूंजी सुरक्षा में छिपी है। वर्तमान में ईपीएफ पर 8.25 प्रतिशत की दर से ब्याज मिल रहा है। पहली नजर में यह रिटर्न सामान्य लग सकता है, लेकिन यदि कर लाभों को भी जोड़कर देखा जाए तो पुराने टैक्स रिजीम में 30 प्रतिशत टैक्स स्लैब वाले कर्मचारियों के लिए इसका प्रभावी रिटर्न लगभग 11.8 प्रतिशत तक पहुंच सकता है। यही कारण है कि वित्तीय योजनाकार ईपीएफ को नौकरीपेशा लोगों के लिए सबसे मजबूत और सुरक्षित रिटायरमेंट निवेश विकल्पों में गिनते हैं।

टैक्स छूट, टैक्स-फ्री ब्याज और सुरक्षित निवेश का लाभ

आयकर अधिनियम की धारा 80सी के तहत उसे लगभग 30 हजार रुपये तक की टैक्स बचत मिल सकती है। इसका मतलब यह हुआ कि कर्मचारी की जेब से वास्तविक रूप से केवल 70 हजार रुपये का खर्च हुआ, लेकिन ब्याज पूरे 1 लाख रुपये पर मिलेगा। 8.25 प्रतिशत की ब्याज दर के हिसाब से एक वर्ष में 8,250 रुपये का ब्याज प्राप्त होगा। यदि इस ब्याज को वास्तविक निवेश यानी 70 हजार रुपये के अनुपात में देखा जाए तो प्रभावी रिटर्न लगभग 11.8 प्रतिशत के बराबर बैठता है। यही वह गणित है जिसे कई कर्मचारी नजरअंदाज कर देते हैं और केवल घोषित ब्याज दर देखकर ईपीएफ के वास्तविक लाभ का आकलन नहीं कर पाते।

ईपीएफ की बड़ी ताकत है ईपीएफ टैक्स सुविधा

वित्तीय विशेषज्ञों के अनुसार EPF की सबसे बड़ी विशेषता इसका ईईई टैक्स ढांचा है। भारत में बहुत कम निवेश विकल्प ऐसे हैं जो यह तीनहरा लाभ प्रदान करते हैं। पहला लाभ निवेश के समय मिलता है। कर्मचारी द्वारा ईपीएफ में जमा की गई राशि पर धारा 80सी के तहत कर छूट का दावा किया जा सकता है। दूसरा लाभ निवेश अवधि के दौरान मिलता है। ईपीएफ खाते में जमा राशि पर मिलने वाला ब्याज पूरी तरह कर मुक्त होता है। तीसरा लाभ निकासी के समय मिलता है। यदि कर्मचारी ने पांच वर्ष या उससे अधिक समय तक लगातार सेवा की है, तो ईपीएफ से निकाली गई राशि भी कर मुक्त रहती है। यानी निवेश से लेकर निकासी तक तीनों चरणों में कर राहत मिलती है। यही वजह है कि ईपीएफ को कर-कुशल निवेश विकल्प माना जाता है।

कैसे बढ़ जाता है ईपीएफ का वास्तविक रिटर्न?

अधिकांश निवेशक किसी भी योजना का मूल्यांकन केवल उस पर मिलने वाले ब्याज या रिटर्न के आधार पर करते हैं। लेकिन ईपीएफ के मामले में यह तरीका पूरी तस्वीर नहीं दिखाता। इसकी वजह यह है कि ईपीएफ निवेश पर कर छूट का अतिरिक्त लाभ मिलता है। मान लीजिए कोई कर्मचारी एक वर्ष में ईपीएफ में 1 लाख रुपये का योगदान करता है। यदि वह पुराने टैक्स रिजीम में है और 30 प्रतिशत टैक्स स्लैब के अंतर्गत आता है, तो

नए टैक्स रिजीम में भी बना हुआ है आकर्षण

सरकार द्वारा लागू किए गए नए टैक्स रिजीम में धारा 80सी के तहत मिलने वाली अधिकांश कर छूट समाप्त कर दी गई है। ऐसे में कुछ लोगों को लगता है कि ईपीएफ का महत्व कम हो गया है। हालांकि ऐसा पूरी तरह सही नहीं है। भले ही नए टैक्स रिजीम में ईपीएफ योगदान पर कर छूट न मिले, लेकिन खाते में मिलने वाला ब्याज अभी भी कर मुक्त रहता है और निर्धारित शर्तों के तहत निकासी पर भी टैक्स नहीं लगता। इसलिए यह योजना आज भी रिटायरमेंट बचत के लिए एक आकर्षक विकल्प बनी हुई है। हालांकि वर्तमान नियमों के अनुसार कर्मचारी के 2.5 लाख रुपये से अधिक वार्षिक योगदान पर मिलने वाले अतिरिक्त ब्याज के एक हिस्से पर कर लगाया जा सकता है। यह प्रावधान मुख्य रूप से उच्च आय वाले कर्मचारियों पर लागू होता है।

सही होम लोन के चुनाव से मिलेगा बड़ा फायदा

मोरेटोरियम, नो-ईएमआई-टिल-पजेशन व बैलून पेमेंट से अति. लाभ | होम लोन का चयन करने से पहले विकल्पों को अच्छी तरह समझें

बिजनेस डेस्क

आज के समय में अपना घर खरीदना अधिकांश लोगों का सपना होता है, लेकिन लगातार बढ़ती प्रॉपर्टी कीमतों के कारण यह सपना पूरा करना आसान नहीं रह गया है। ऐसे में होम लोन लाखों लोगों के लिए घर खरीदने का सबसे बड़ा सहारा बनता है। हालांकि होम लोन लेते समय अधिकांश लोग केवल ब्याज दर और ईएमआई पर ध्यान देते हैं, जबकि बैंक और हाउसिंग फाइनेंस कंपनियां ग्राहकों की जरूरतों के अनुसार कई तरह के लोन विकल्प भी उपलब्ध कराती हैं। इन विकल्पों में मोरेटोरियम लोन, नो-ईएमआई-टिल-पजेशन स्कीम और बैलून पेमेंट लोन प्रमुख हैं। प्रत्येक योजना की अपनी विशेषताएं, फायदे और कुछ सीमाएं हैं। इसलिए किसी भी होम लोन का चयन करने से पहले इन विकल्पों को अच्छी तरह समझना जरूरी है।

मोरेटोरियम लोन देता है राहत

मोरेटोरियम लोन उन लोगों के लिए उपयोगी माना जाता है जो कुछ समय के लिए आर्थिक दबाव का सामना कर रहे हों या भविष्य में उनकी आय बढ़ने की संभावना हो। इस योजना में उधारकर्ता को एक निश्चित अवधि तक नियमित ईएमआई का भुगतान नहीं करना पड़ता। हालांकि यह सुविधा पूरी तरह मुफ्त नहीं होती। मोरेटोरियम अवधि के दौरान भी लोन पर ब्याज लगातार जुड़ता रहता है। बाद में यह ब्याज मूल बकाया राशि में जोड़ दिया जाता है।

नो-ईएमआई-टिल-पजेशन योजना

वर्तमान समय में बड़ी संख्या में लोग निर्माणाधीन परियोजनाओं में घर खरीदते हैं। ऐसे खरीदारों के लिए नो-ईएमआई-टिल-पजेशन स्कीम आकर्षक विकल्प हो सकती है। इस योजना में घर का कब्जा मिलने तक खरीदार को नियमित ईएमआई का भुगतान नहीं करना पड़ता। कई मामलों में बिल्डर इस अवधि के दौरान ब्याज या ईएमआई का खर्च वहन करता है। इससे खरीदार पर तत्काल वित्तीय बोझ कम हो जाता है। यह योजना विशेष रूप से उन लोगों के लिए फायदेमंद मानी जाती है जो वर्तमान में किराए के मकान में रह रहे हैं और साथ ही नया घर भी खरीद रहे हैं। इससे उन्हें एक साथ किराया और ईएमआई दोनों का बोझ नहीं उठाना पड़ता। हालांकि विशेषज्ञों का मानना है कि इस सुविधा की लागत अक्सर किसी न किसी रूप में प्रॉपर्टी की कीमत में शामिल हो सकती है। इसलिए ग्राहकों को योजना के सभी नियम और शर्तें ध्यान से पढ़नी चाहिए।

बैलून पेमेंट लोन बेहतर

बैलून पेमेंट लोन पारंपरिक होम लोन से थोड़ा अलग होता है। इसमें शुरुआती वर्षों के दौरान ईएमआई अपेक्षाकृत कम रखी जाती है, जिससे मासिक भुगतान का दबाव कम रहता है। लेकिन लोन की अवधि के अंतिम चरण में उधारकर्ता को एक बड़ी राशि एकमुश्त चुकानी होती है। इसी बड़े अंतिम भुगतान को बैलून पेमेंट कहा जाता है। यह विकल्प उन लोगों के लिए उपयुक्त हो सकता है जिन्हें भविष्य में आय में उल्लेखनीय वृद्धि की उम्मीद हो। उदाहरण के लिए किसी कर्मचारी को बड़े बोनस, ईएसओपी (ईएसओपी) से लाभ या वेतन में महत्वपूर्ण बढ़ोतरी की संभावना हो। वहीं व्यवसायियों को भविष्य में किसी बड़े लाभ की उम्मीद हो सकती है। हालांकि यदि अनुमानित आय वृद्धि नहीं होती तो अंतिम भुगतान करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। इसलिए इस विकल्प को चुनते समय वित्तीय स्थिति का वास्तविक आकलन करना जरूरी है।

लोन लेते समय रखें ध्यान

होम लोन का कोई भी विशेष विकल्प चुनने से पहले केवल कम ईएमआई या शुरुआती राहत को देखकर फैसला नहीं करना चाहिए। यह समझना जरूरी है कि लंबे समय में कुल भुगतान कितना होगा और अतिरिक्त सुविधाओं की वास्तविक लागत क्या है। ग्राहकों को लोन की कुल अवधि, कुल ब्याज भुगतान, संभावित जोखिम और अपनी भविष्य की आय की स्थिति का मूल्यांकन करना चाहिए। इसके अलावा सभी नियमों और शर्तों को विस्तार से पढ़ना भी जरूरी है।

जरूरत अनुसार चुनें सही विकल्प

हर व्यक्ति की आर्थिक स्थिति और जरूरत अलग होती है। इसलिए कोई भी एक लोन योजना सभी के लिए उपयुक्त नहीं हो सकती। जहां मोरेटोरियम लोन अस्थायी राहत प्रदान करता है, वहीं नो-ईएमआई-टिल-पजेशन योजना निर्माणाधीन मकान खरीदने वालों के लिए फायदेमंद हो सकती है। दूसरी ओर बैलून पेमेंट लोन उन लोगों के लिए उपयोगी साबित हो सकता है जिन्हें भविष्य में अधिक आय की उम्मीद हो। विशेषज्ञों का मानना है कि सही जानकारी और सावधानीपूर्वक मूल्यांकन के साथ चुना गया होम लोन न केवल घर खरीदने का सपना पूरा करता है, बल्कि लंबे समय तक वित्तीय संतुलन बनाए रखने में भी मदद करता है।

डबल इनकम, डबल सुरक्षा : नौकरीपेशा दंपतियों के लिए कुछ जरूरी वित्तीय नियम

पति-पत्नी दोनों कमाते हैं तो सही बजट, नियमित संवाद जरूरी

बेहतर आर्थिक भविष्य के लिए स्वास्थ्य सुरक्षा भी उतनी ही जरूरी है। नियमित स्वास्थ्य जांच, मेडिकल इमरजेंसी फंड और पर्याप्त स्वास्थ्य बीमा परिवार को अचानक आने वाले खर्चों से बचा सकते हैं। इसके अलावा जीवन बीमा भी परिवार की आर्थिक सुरक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।

तैयारी
बिजनेस डेस्क

आज के दौर में जब पति-पत्नी दोनों नौकरी करते हैं, तो परिवार की आय बढ़ने के साथ-साथ आर्थिक अवसर भी बढ़ जाते हैं। घर खरीदने, बच्चों की शिक्षा, बेहतर जीवनशैली और सुरक्षित रिटायरमेंट जैसे बड़े लक्ष्य अपेक्षाकृत आसानी से हासिल किए जा सकते हैं। हालांकि दोहरी आय के साथ वित्तीय प्रबंधन की जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है। कई बार खर्च, बचत और निवेश को लेकर स्पष्ट योजना न होने से मतभेद और आर्थिक असंतुलन पैदा हो सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि डबल इनकम वाले दंपतियों के लिए नियमित वित्तीय चर्चा, साझा बजट, व्यक्तिगत और संयुक्त खर्चों के बीच संतुलन, पर्याप्त बीमा और अनुशासित निवेश बेहद जरूरी हैं। यदि दोनों साथी मिलकर स्पष्ट वित्तीय लक्ष्य तय करें और उनके अनुसार योजना बनाएं, तो न केवल वर्तमान जरूरतें बेहतर ढंग से पूरी की जा सकती हैं, बल्कि भविष्य की आर्थिक चुनौतियों का सामना भी आसानी से किया जा सकता है। छोटी-छोटी वित्तीय आदतें लंबे समय में बड़ी सफलता की नींव बनती हैं।

'मेरा, तुम्हारा और हमारा' फॉर्मूला अपनाएं

शादी के बाद भी आर्थिक स्वतंत्रता का महत्व बना रहता है। इसके लिए आय को तीन हिस्सों में बांटा जा सकता है। एक हिस्सा साझा खर्चों और पारिवारिक लक्ष्यों के लिए, जबकि बाकी दोनों पार्टनर के व्यक्तिगत खर्चों के लिए रखा जा सकता है। इससे जिम्मेदारियों और व्यक्तिगत जरूरतों के बीच संतुलन बना रहता है।

पैसों को लेकर खुलकर करें बातचीत

अक्सर दंपति आय और खर्चों को लेकर नियमित चर्चा नहीं करते, जिससे कई बार गलतफहमियां पैदा हो जाती हैं। विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि हर महीने एक तय समय पर बैठकर आय, खर्च, बचत और भविष्य की योजनाओं पर चर्चा करनी चाहिए। इससे वित्तीय फैसले पारदर्शी बनते हैं और आपसी विश्वास भी मजबूत होता है।

सही वित्तीय योजना से रख सकते हैं सुरक्षित और समृद्ध भविष्य की मजबूत नींव

मिलकर बनाएं संतुलित बजट

दोनों की कुल आय को ध्यान में रखते हुए मासिक बजट तैयार करना जरूरी है। इसमें घर का किराया, राशन, बच्चों की जरूरतें, यात्रा और अन्य नियमित खर्चों के साथ भविष्य के लक्ष्यों के लिए भी राशि निर्धारित करनी चाहिए। एक व्यवस्थित बजट अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण रखने में मदद करता है।

बचत और निवेश को बनाएं आदत

दोहरी आय का सबसे बड़ा लाभ तभी मिलता है जब उसका एक हिस्सा नियमित रूप से बचत और निवेश में लगाया जाए। विशेषज्ञ कम से कम छह महीने के खर्चों के बराबर इमरजेंसी फंड बनाने की सलाह देते हैं। इसके बाद जोखिम क्षमता और वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार म्यूचुअल फंड, पीपीएफ, एनपीएस या अन्य निवेश विकल्पों में निवेश किया जा सकता है।

छोटी आदतें, बड़ा फायदा

वित्तीय विशेषज्ञों का कहना है कि आर्थिक सफलता किसी एक बड़े फैसले से नहीं, बल्कि रोजमर्रा की छोटी और अनुशासित आदतों से हासिल होती है। नियमित संवाद, सही बजट, पर्याप्त सुरक्षा और व्यवस्थित निवेश के जरिए डबल इनकम वाले दंपति अपने सपनों को तेजी से पूरा कर सकते हैं और भविष्य को अधिक सुरक्षित बना सकते हैं।

खबर संक्षेप

धूमधाम से मनाया गया पीर बाबा बणवाला का मेला

रतिया। शहर के वार्ड नंबर एक में इंडेन गैस एजैंसी के पीछे स्थिता पीर बाबा बणवाला का वार्षिक मेला बड़ी धूमधाम व श्रद्धा भावना से मनाया गया। कार्यक्रम में आसपास व दूरदराज से काफी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लेकर माथा टेका व मन्नतें मांगी। कार्यक्रम के दौरान दीवान भी सजाए गए। जिसमें कलाकारों ने धार्मिक गीतों के माध्यम से बाबा की महिमा का गुणगान कर श्रद्धालुओं को झूमने पर मजबूर कर दिया। कार्यक्रम में बाबा जीवन खान, बाबा जग्गा, बाबा गगन शाह ने शिरकत की।

सुखमणी साहिब जी का किया पाठ

रतिया। श्री गुरु अर्जुन देव महाराज जी के शहीदी पर्व को समर्पित श्री सुखमणी सेवा सोसायटी द्वारा शहर के पुराना बाजार स्थित गुरुद्वारा साहिब में पिछले कई दिनों से श्री सुखमणी साहिब के पाठ किया जा रहा था जिसकी आज समापन किया गया। श्री सुखमणी सेवा सोसायटी के सदस्य जसवीर कौर, अमृत रानी, नसीब कौर, चरणजीत कौर, सिमरजीत कौर, हरिंद्र कौर, आशावंती, कुलवंत कौर, कोमल कौर ने बताया कि सोसायटी द्वारा हर वर्ष पंचम पातशाह जी के शहीदी पर्व मौके श्री सुखमणी साहिब जी के पाठ किए जाते हैं जिसमें संगत बढ़ चढ़ कर शामिल होती है।

18 को मुख्य पीरखाना में लगेगा वार्षिक मेला

रतिया। श्री शिव मंदिर एवं पीरखाना सेवा ट्रस्ट की बैठक मुख्य पीरखाना, टोहाना रोड पर ट्रस्ट के संरक्षक राज कुमार मित्तल की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में 18 जून को आयोजित होने वाले वार्षिक मेले, दीवान एवं दिन-रात के अखंड भंडारे की तैयारियों की समीक्षा कर उन्हें अंतिम रूप दिया गया। बैठक में मेले के सफल आयोजन के लिए ट्रस्ट के सदस्यों को अलग-अलग जिम्मेदारियां सौंपी गईं।

साप्ताहिक योग शिविर 15 जून से

सिरसा। श्रीमत सिटी सेंटर द्वारा अपने सामाजिक सरोकार के तहत 15 जून से 21 जून तक साप्ताहिक योग शिविर का आयोजन रेलवे पार्क में महात्मा बुद्ध योग संस्थान के सहयोग से किया जा रहा है, जिसमें योगाचार्य नरेंद्र योगी योग साधकों को योग की विभिन्न क्रियाओं के बारे में जानकारी देंगे और अभ्यास करवाएंगे। योग शिविर का समय सुबह साढ़े 5 बजे से प्रातः 7 बजे तक रहेगा। श्रीमत सिटी सेंटर प्रबंधन की ओर से बताया गया कि अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में इस योग शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

गुरप्रीत नागपाल को प्रधान किया नियुक्त

सिरसा। लायंस क्लब सिरसा सैंट्रल की शनिवार को बैठक हुई। बैठक में गुरप्रीत नागपाल को सर्वसम्मति से प्रधान तथा बलविंद्र कालड़ा को सचिव अनिल गाबा को कोषाध्यक्ष व पवन जैन को सह कोषाध्यक्ष बनाया गया। संजय गांधी ने सुधीर ललित को जोन चेयरमैन बनाया है।

मत्स्य पालकों को एसी वाहन खरीदने के लिए मिलेगी सब्सिडी

सिरसा। मत्स्य पालन विभाग द्वारा प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के अंतर्गत रेफ्रिजरेटेड/ इंसुलेटेड वाहन खरीद योजना चलाई जा रही है। इस योजना का उद्देश्य मछली परिवहन सुविधाओं को मजबूत बनाना तथा मछलियों को सुरक्षित और ताजा अवस्था में बाजार तक पहुंचाना है। योजना के तहत लाभार्थियों को रेफ्रिजरेटेड वाहन खरीदने पर अनुदान प्रदान किया जाएगा।योजना के अनुसार लाभार्थी के पास परिवार पहचान पत्र होना अनिवार्य है। साथ ही लाभार्थियों को यह सुनिश्चित करना होगा कि मछली परिवहन सुविधाओं को चालू स्थिति में बनाए रखा जाए। विभाग की ओर से केवल एक ही नए रेफ्रिजरेटेड वाहन की खरीद पर अनुदान दिया जाएगा।

केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने पर राज्यसभा सांसद ने किया पौधरोपण

पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत ने विकास के नए कीर्तिमान किए स्थापित : बराला

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

फतेहाबाद। केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने पर पौधरोपण करते राज्यसभा सांसद सुभाष बराला व पौधरोपण करते हुए पूर्व विधायक दुड़ाराम। फोटो : हरिभूमि

केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में राज्यसभा सांसद सुभाष बराला ने गांव दमकौरा के खेल स्टेडियम में आयोजित कार्यक्रम में पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। उन्होंने विकसित भारत के संकल्प को साकार करने में युवाओं की भूमिका को सबसे महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि राष्ट्र निर्माण, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक जागरूकता जैसे अभियानों में युवाओं की सक्रिय भागीदारी से ही विकसित भारत का सपना साकार होगा। उन्होंने युवाओं को प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझने और पर्यावरण संरक्षण के लिए सक्रिय योगदान देने का आह्वान किया।राज्यसभा सांसद सुभाष बराला ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के 12 वर्ष सेवा, सुशासन, गरीब कल्याण और राष्ट्र निर्माण को समर्पित रहे हैं। इन वर्षों में देश ने विकास, आधारभूत ढांचे, डिजिटल क्रांति, सामाजिक सुरक्षा और आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है। उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी देश के इतिहास में सबसे लंबे समय तक चुने हुए प्रधानमंत्री के रूप में कार्य करने का रिकॉर्ड स्थापित कर चुके हैं। उनके नेतृत्व में भारत ने वैश्विक मंच पर अपनी मजबूत पहचान बनाई है और विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में अपना स्थान सुदृढ़ किया है। बराला ने कहा कि केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने का यह अवसर केवल उपलब्धियों का उत्सव नहीं, बल्कि समाज और पर्यावरण के प्रति अपने दायित्वों को याद करने का भी अवसर है। उन्होंने कहा कि विकास और पर्यावरण संरक्षण एक-दूसरे के पूरक हैं तथा दोनों के बीच संतुलन बनाकर ही सतत विकास का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

लगेगा जनकल्याण शिविर

फतेहाबाद। केन्द्र सरकार के 12 वर्षों की उपलब्धियों को जनता तक पहुंचाने एवं विकसित भारत के संकल्प को मजबूत करने के लिए फतेहाबाद के डीपीआरसी हॉल में 15 जून को प्रातः 9 बजे जनकल्याण शिविर आयोजित किया जाएगा। एडीसी अनुराग ढालिया ने बताया कि इस शिविर में केंद्र एवं राज्य सरकार की प्रमुख योजनाओं जैसे आयुष्मान भारत, लखपति दीदी, बीबी जीरामजी, पीएम आवास, पीएम किसान, पीएम सूर्य घर, पीएम स्वनिधि के त्वरित पंजीकरण, आवेदन पत्र भरने की व्यवस्था की जाएगी। साथ ही 12 वर्षों की विकास यात्रा पर डॉक्यूमेंट्री व वीडियो फिल्म का प्रदर्शन किया जाएगा।

प्रो-एक्टिव नीति से 36,407 लोगों की घर बैठे बनी पेंशन

फतेहाबाद। जिले में वर्तमान में 2 लाख 17 हजार 603 लाभार्थी विभिन्न सामाजिक सुरक्षा पेंशन एवं वित्तीय सहायता योजनाओं का लाभ उठा रहे हैं। जिले में 96 हजार 900 वृद्धजन वृद्धावस्था सम्मान भत्ता योजना के तहत प्रतिमाह 3,200 रुपये प्राप्त कर रहे हैं, जबकि 39 हजार 239 विधवा एवं निराश्रित महिलाओं को भी प्रतिमाह 3,200 रुपये की सहायता दी जा रही है। इसी प्रकार 51 हजार 994 महिलाओं को दीन दयाल लाडो लक्ष्मी योजना के तहत प्रतिमाह 2,100 रुपये का लाभ मिल रहा है। जिला समाज कल्याण अधिकारी सत्यवान ढिलोड़ ने बताया कि 10 हजार 908 निराश्रित बच्चों को वित्तीय सहायता, 11 हजार 858 दिव्यांगजनों को दिव्यांग पेंशन, 3 हजार 854 विधुर एवं अविवाहित व्यक्तियों को वित्तीय सहायता तथा 2 हजार 23 महिलाओं को लाडली सामाजिक सुरक्षा भत्ता प्रदान किया जा रहा है। इसके अलावा 422 मंदबुद्धि बच्चों, 397 कैंसर रोगियों तथा 5 बौने लाभार्थियों को भी सरकार द्वारा नियमित आर्थिक सहायता दी जा रही है। उन्होंने बताया कि एसिड अटैक पीड़ितों को उनकी दिव्यांगता के प्रतिशत के अनुसार 8 हजार रुपये से 14 हजार 400 रुपये तक मासिक सहायता उपलब्ध करवाई जाती है।

हरियाणा में माटी कला बोर्ड का पद डेढ़ साल से खाली, कुम्हार समाज में रोष

फतेहाबाद। हरियाणा में माटी कला बोर्ड के चेयरमैन का पद पिछले करीब डेढ़ वर्ष से खाली पड़े होने के कारण प्रदेश के कुम्हार (प्रजापति) समाज में सरकार के खिलाफ भारी नाराजगी और रोष बढ़ता जा रहा है। इस संबंध में राष्ट्रीय प्रजापति संघ के अध्यक्ष मुकेश प्रजापति ने मुख्यमंत्री से इस पद को तुरंत भरने की पुरजोर वकालत की है। संघ ने मांग की है कि फतेहाबाद जिले में कुम्हार समाज की एक बड़ी आबादी को देखते हुए इस बार माटी कला बोर्ड का अगला उम्मीदवार फतेहाबाद जिले से ही घोषित किया जाए।राष्ट्रीय प्रजापति संघ के अध्यक्ष मुकेश प्रजापति ने मुख्यमंत्री को भेजे अपने मांग पत्र में कहा कि माटी कला बोर्ड का गठन समाज के पारंपरिक शिल्पकारों, मिट्टी के बर्तन और मूर्तियां बनाने वाले गरीब परिवारों के उत्थान के लिए किया गया था, लेकिन पिछले डेढ़ साल से बोर्ड का शीर्ष पद खाली होने के कारण समाज से जुड़ी कल्याणकारी योजनाएं ठप पड़ी हैं। अधिकारी स्तर पर कोई बड़ा फैसला नहीं हो पा रहा है, जिससे पारंपरिक कारीगरों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है। प्रजापति ने फतेहाबाद जिले का विशेष रूप से जिक्र करते हुए कहा कि फतेहाबाद जिले में अकेले कुम्हार समाज की जनसंख्या लगभग 25,000 के करब है। इतनी बड़ी संख्या होने के बावजूद इस क्षेत्र के समाज को उचित राजनीतिक व सामाजिक प्रतिनिधित्व नहीं मिल पाया है, जिससे स्थानीय लोगों में असंतोष की भावना है। उन्होंने तर्क दिया कि यदि फतेहाबाद जिले से किसी योग्य और जमीन से जुड़े व्यक्ति को माटी कला बोर्ड का अध्यक्ष बनाया जाता है, तो इससे न केवल स्थानीय समाज का मान बढ़ेगा, बल्कि पूरे प्रदेश के कुम्हार समाज में सरकार के प्रति एक सकारात्मक संदेश जाएगा। कुम्हार समाज ने साफ कर दिया है कि यदि जल्द ही उनकी मांगों पर विचार नहीं किया गया, तो समाज आगामी दिनों में अपनी रणनीति बदलने को मजबूर होगा।

सहकारी श्रम एवं निर्माण प्रसंघ चुनाव में शाम लाल बंसल बने निर्विरोध निदेशक

फतेहाबाद। दि फतेहाबाद जिला सहकारी श्रम एवं निर्माण प्रसंघ के निदेशक मंडल चुनाव में रतिया जोन से शामलाल निर्विरोध चुने गए है। सहायक रजिस्ट्रार सहकारी समितियां फतेहाबाद जितेन्द्र कौशिक द्वारा जारी उम्मीदवारों की सूची में जोन नं. 3 रतिया सामान्य से केवल शामलाल का नामांकन पत्र वैध पाया गया है। बता दें कि 21 जून को होने वाले चुनाव के लिए 8 जून तक नामांकन दाखिल किए गए थे। 10 जून को हुई जांच-पड़ताल में रतिया जोन से शामलाल का पर्चा सही पाया गया। इस जोन से उनके अलावा किसी अन्य उम्मीदवार ने नामांकन नहीं भरा है। ऐसे में उनको निर्विरोध निदेशक चुना गया है। सहायक रजिस्ट्रार ने फतेहाबाद एलसी फैडरेशन को सूची भेजकर नोटिस बोर्ड पर चस्पा करने के निर्देश दिए हैं। उल्लेखनीय है कि श्याम लाल बंसल की गिनती रतिया के समाज सेवकों में की जाती है और वह काली माता मंदिर कमेटी के प्रधान भी हैं।

हरि-हर की कृपा बरसाएगी सोमवती अमावस्या पितृ शांति व पुण्य लाभ का बनेगा दुर्लभ संयोग

सर्वार्थ सिद्धि और अमृत सिद्धि योग से बढ़ेगा धार्मिक महत्व

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

हिंदू पंचांग के अनुसार इस वर्ष सोमवती अमावस्या का पावन पर्व कल 15 जून, सोमवार को श्रद्धा और आस्था के साथ मनाया जाएगा। अमावस्या तिथि प्रातः 8 बजकर 23 मिनट तक रहेगी। सूर्योदय के समय अमावस्या तिथि विद्यमान रहने के कारण व्रत, स्नान, दान, तर्पण और अन्य धार्मिक अनुष्ठानों का विशेष महत्व इसी दिन रहेगा।श्री श्याम मंदिर के पुजारी एवं ज्योतिषाचार्य पंडित सूरज शर्मा ने बताया कि धार्मिक ग्रंथों में सोमवती अमावस्या को पितरों की शांति और उनके आशीर्वाद की प्राप्ति के लिए अत्यंत शुभ माना गया है। गरुड़ पुराण के अनुसार इस दिन पितरों का तर्पण और पिंडदान करने से पितृदोष का निवारण होता है तथा परिवार पर पितरों की कृपा बनी रहती है। इसके साथ ही दान-पुण्य और स्नान से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है। उन्होंने बताया कि जो श्रद्धालु किसी तीर्थ स्थल या पवित्र नदी में स्नान करने नहीं जा सकते, वे घर पर स्नान के जल में गंगाजल मिलाकर सभी तीर्थों का स्मरण करते हुए भगवान विष्णु के नाम का जप करें। ऐसा करने से भी तीर्थ स्नान के समान पुण्य फल प्राप्त होता है।

पंडित सूरज शर्मा के अनुसार इस बार अधिक मास में पड़ रही सोमवती अमावस्या का संयोग विशेष माना जा रहा है। कई वर्षों बाद ऐसा अवसर आया है, जब इस तिथि पर सर्वार्थ सिद्धि योग और अमृत सिद्धि योग जैसे शुभ संयोग भी बन रहे हैं। इन योगों में किए गए मंत्र जाप, पूजा-अर्चना, तर्पण, दान तथा ब्राह्मण भोजन का फल कई गुना बढ़ जाता है। उन्होंने बताया कि स्कंद पुराण में सोमवार और अमावस्या के संयोग को अत्यंत दुर्लभ माना गया है।

करोड़ों यज्ञों के समान मिलता है पुण्य-फल

इस दिन भगवान शिव के पूजन और दर्शन से करोड़ों यज्ञों के समान पुण्य फल प्राप्त होने का उल्लेख मिलता है। वहीं पुरुषार्थ चिंतामणि में सोमवार को आने वाली अमावस्या को पुष्कर योग की संज्ञा दी गई है। पंडित शर्मा ने कहा कि सोमवार भगवान शिव को समर्पित होता है, जबकि अधिक मास भगवान विष्णु का प्रिय माना जाता है। ऐसे में यह दिन हरि और हर दोनों की संयुक्त उपासना के लिए विशेष फलदायी माना गया है। इस दिन भगवान शिव और भगवान विष्णु की आराधना करने से सुख, शांति और समृद्धि की प्राप्ति होती है।

नशे से बाहर निकालने में पुलिस करेगी सहयोग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रानिया

सिरसा। पत्रकारों के साथ बातचीत करते थाना प्रभारी सुखबीर सिंह। फोटो : हरिभूमि

रानियां क्षेत्र को नशा मुक्त बनाने के उद्देश्य से थाना प्रभारी सुखबीर सिंह ने कार्यभार संभालते ही एक नई पहल शुरू की है। पुलिस अब नशे के खिलाफ केवल कार्रवाई तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि नशे की गिरफ्त में आए युवाओं को बाहर निकालने और पीड़ित परिवारों को सहयोग देने की दिशा में भी काम करेगी। रानियां थाना परिसर में पत्रकारों, चिकित्सकों और नशा मुक्ति अभियान से जुड़े लोगों के साथ विशेष बैठक आयोजित की गई। बैठक में नशे की समस्या, युवाओं परइसके प्रभाव और इससे निपटने के लिए पुलिस एवं समाज की संयुक्त भूमिका पर विचार-विमर्श किया गया। थाना प्रभारी सुखबीर सिंह ने कहा कि नशे के खिलाफ लड़ाई किसी एक विभाग की नहीं, बल्कि पूरे समाज की जिम्मेदारी है। पुलिस का प्रयास रहेगा कि जो युवा नशे की लत छोड़कर सामान्य जीवन की ओर लौटना चाहते हैं, उन्हें हर संभव सहयोग दिया जाए। ऐसे लोगों को नशा मुक्ति केंद्रों से जोडने, काउंसलिंग करवाने और जरूरी सहायता उपलब्ध करवाने में पुलिस सहयोगी की भूमिका निभाएगी। उन्होंने कहा कि कई परिवार सामाजिक झिझक या डर के कारण अपनी परेशानी सामने नहीं रख पाते। पुलिस और आमजन के बीच विश्वास का माहौल बनाना जरूरी है, ताकि समय रहते युवाओं को नशे के दलदल से बाहर निकाला जा सके। थाना प्रभारी ने नशा तस्करों को चेतावनी देते हुए कहा कि युवाओं के भविष्य से खिलवाड़ करने वालों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा। नशे के अवैध कारोबार से जुड़े लोगों पर पैनी नजर रखी जाएगी और उनके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी। बैठक में मेडिकल नशे के बढ़ते खतरे पर भी चिंता जताई गई। वक्ताओं ने कहा कि आसानी से उपलब्ध होने वाला मेडिकल नशा युवाओं के लिए गंभीर चुनौती बन रहा है। इसके लिए जागरूकता और समय रहते रोकथाम जरूरी है। नशा मुक्ति अभियान से जुड़े काउंसलर हरजिंद्र सिंह ने बताया कि उनकी टीम पिछले दो वर्षों में करीब डेढ़ दर्जन युवाओं को पूरी तरह नशे की लत से मुक्त करवा चुकी है, जो आज सामान्य और सम्मानजनक जीवन जी रहे हैं।

पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा

सिरसा। पौधरोपण करते भाजपा कार्यकर्ता। फोटो : हरिभूमि

केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में शनिवार को वन विभाग की ओर से बरनाला रोड स्थित हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी में पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। स अवसर पर नगर परिषद अध्यक्ष शांति स्वरूप, भाजपा जिलाध्यक्ष यतिंद्र सिंह, वन मंडल अधिकारी सतीश कुमार, भाजपा मंडल अध्यक्ष सुमन शर्मा, मंडल अध्यक्ष अंबर कुमार सहित अन्य गणमान्य नागरिकों व जनप्रतिनिधियों ने पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। भाजपा जिलाध्यक्ष यतिंद्र सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बीते 12 वर्षों में देश ने विकास, सुशासन और जनकल्याण के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को प्राप्त किया है। पर्यावरण संरक्षण को भी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं में शामिल करते हुए जनभागीदारी को बढ़ावा दिया गया है। वन मंडल अधिकारी सतीश कुमार ने कहा कि पौधरोपण के साथ-साथ पौधों का संरक्षण भी उतना ही आवश्यक है। उन्होंने लोगों से अधिक से अधिक पौधे लगाने तथा उनकी देखभाल करने का आह्वान किया। इस अवसर पर भाजपा नेता सुरेश पंवार, सांवरमल गुर्जर, आनंद रावत, चरणजीत लूथरा, बबीता, कविता सिहाग आदि मौजूद रहे।

बाइक लोन सेटलमेंट के नाम पर ठगी का आरोपी गिरफ्तार

फतेहाबाद। बाइक लोन की किस्तों का सेटलमेंट करवाने का झांसा देकर एक व्यक्ति से 20 हजार रुपये की साइबर धोखाधड़ी करने के मामले में थाना शहर रतिया पुलिस ने एक युवक को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए युवक की पहचान गांव चंदड़ कलां निवासी मनोज कुमार के रूप में हुई है। थाना शहर रतिया की प्रभारी महिला निरीक्षक पुष्पा ने बताया कि रतिया के वार्ड नंबर 2 निवासी सोनू पुत्र गुरमेज सिंह ने इस संबंध में पुलिस को एक शिकायत दर्ज करवाई थी। शिकायतकर्ता सोनू ने बताया कि एक अज्ञात व्यक्ति ने खुद को फाइनेंस कंपनी का एजेंट बताकर उससे संपर्क किया।

पीएम श्री जवाहर नवोदय विद्यालय में प्रवेश के लिए आवेदन शुरू

ओढां। पीएम श्री स्कूल जवाहर नवोदय विद्यालय ओढां में सत्र 2026-27 के लिए कक्षा 11वीं में रिक्त सीटों पर प्रवेश हेतु आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। विद्यालय में विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय में रिक्तियों को मेरिट के आधार पर भरा जाएगा। इसके लिए इच्छुक विद्यार्थियों से ऑनलाइन तथा ऑफलाइन माध्यम से आवेदन पत्र मांगे गए हैं। प्राचार्य ललित कालड़ा ने बताया कि वे विद्यार्थी आवेदन करने के पात्र होंगे जिन्होंने सत्र 2025-26 में कक्षा 10वीं सीबीएसई अथवा राज्य बोर्ड से उत्तीर्ण की हो। वहीं, सीबीएसई बोर्ड से पास विद्यार्थियों को प्राथमिकता दी जाएगी। आवेदन करने वाले विद्यार्थियों के लिए कम से कम 60 प्रतिशत अंक होना अनिवार्य है। विज्ञान संकाय में प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थियों के लिए विज्ञान और गणित दोनों विषयों में 60 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करना जरूरी होगा। अभ्यर्थी की जन्म तिथि 1 जून 2009 से 31 जुलाई 2011 के बीच होनी चाहिए। इच्छुक विद्यार्थी आवेदन पत्र वेबसाइट अथवा विद्यालय की वेबसाइट से डाउनलोड कर सकते हैं। भरे हुए आवेदन पत्र विद्यालय की ईमेल आईडी पर भेजे जा सकते हैं। इसके अलावा विद्यार्थी सोमवार से शनिवार सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक विद्यालय कार्यालय में व्यक्तिगत रूप से भी आवेदन जमा करवा सकते हैं।

राजीव जैन बने अग्रवाल वैश्य समाज के प्रदेश उपाध्यक्ष

फतेहाबाद। अग्रवाल वैश्य समाज के प्रदेश अध्यक्ष अशोक बुवानीवाला ने फतेहाबाद के पूर्व विधानसभा अध्यक्ष राजीव जैन को वैश्य समाज का प्रदेश उपाध्यक्ष मनोनीत किया है। इस नियुक्ति की घोषणा करते हुए बुवानीवाला ने कहा कि राजीव जैन के लंबे अनुभव और सामाजिक कार्यों का संगठन को बहुत बड़ा लाभ मिलेगा, जिससे वैश्य समाज का संगठन और अधिक मजबूत होकर उभरेगा। अपनी इस नई और अहम जिम्मेदारी पर राजीव जैन ने शीर्ष नेतृत्व का धन्यवाद किया है। उन्होंने प्रदेश अध्यक्ष अशोक बुवानीवाला, महिला इकाई की प्रदेश अध्यक्ष सुशीला सराफ, प्रदेश प्रवक्ता सुशील बंसल, जिला अध्यक्ष राजेंद्र मित्तल सहित प्रदेश के सभी वरिष्ठ पदाधिकारियों का आभार व्यक्त किया।

अवैध कब्जों को लेकर बीडीपीओ सख्त, कार्रवाई के दिए निर्देश

सिरसा। जिला के गांव तरकांवाली में पंचायती भूमि पर अवैध कब्जे के मामले में खंड विकास एवं पंचायत अधिकारी चौपटा द्वारा गांव के सरपंच व सचिव को पत्र लिखकर कार्रवाई किए जाने की मांग की है। गांव तरकांवाली के व्हीस्ल ब्लोअर जयप्रकाश पुत्र जगत सिंह द्वारा अवैध कब्जे हटाने के आदेशों की पालना न किए जाने को लेकर बीडीपीओ को पत्र लिखा था। जिसके जवाब में बीडीपीओ चौपटा ने 3 जून 2026 को पत्र लिखकर कार्रवाई करने के निर्देश दिए है। ग्रामीण जयप्रकाश द्वारा कोर्ट के आदेश के बावजूद अवैध कब्जाधारियों को संरक्षण दिए जाने के आरोप लगाए थे। मामलले में जिला विकास एवं पंचायत अधिकारी-सह-सहायक कलेक्टर प्रथम श्रेणी की अदालत द्वारा गांव के आधा दर्जन से अधिक लोगों को अवैध कब्जे का आरोपी पाया था। मामले में यह पाया गया कि 11 लोगों द्वारा जिस जगह पर कब्जा जमाया गया है, वह तरकांवाली ग्राम पंचायत की मलकीयत है। ग्राम सचिव अनिल कुमार की ओर से भी कब्जे को अवैध बताया गया था। नवंबर-2025 में पारित आदेशों की पालना न किए जाने पर ग्रामीण जयप्रकाश की ओर से कार्रवाई हेतू द्वार खटखटाया गया था।

- 11 लोगों पर पंचायती भूमि पर कब्जे का आरोप

एसडीएम ने बताई विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान की रूपरेखा

मतदाता सूची अपडेट के लिए दो रंगीन फोटो जरूरी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रतिया

रतिया। पत्रकारों से बातचीत करते एसडीएम।

रतिया विधानसभा क्षेत्र के निर्वाचक पंजीकरण अधिकारी एवं एसडीएम सुरेन्द्र सिंह ने मतदाताओं से अपील की है कि वे एसआईआर अभियान के दौरान अपने घर पहुंचने वाले बूथ लेवल अधिकारियों को दो रंगीन पासपोर्ट साइज फोटो अवश्य उपलब्ध करवाएं, ताकि मतदाता सूची में उनकी फोटो एवं अन्य जानकारियां सही एवं सटीक रूप से दर्ज की जा सकें। मतदाता सूची को त्रुटिरहित, अद्यतन एवं पारदर्शी बनाने के लिए प्रत्येक नागरिक का सहयोग आवश्यक है तथा बीएलओ द्वारा मांगी गई जानकारी उपलब्ध करवाना प्रत्येक मतदाता की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

एसडीएम सुरेन्द्र सिंह शनिवार को लघु सचिवालय स्थित अपने कार्यालय में आयोजित प्रेस वार्ता को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा वर्ष 2026 के लिए विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान चलाया जा रहा है, जिसके तहत मतदाता सूची का व्यापक सत्यापन किया जाएगा। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य सभी पात्र नागरिकों के नाम मतदाता सूची में शामिल करना तथा अपात्र, मृत अथवा स्थानांतरित मतदाताओं के नाम हटाकर सूची को अधिक शुद्ध एवं विश्वसनीय बनाना है। उन्होंने बताया कि निर्वाचन आयोग ने 1 जुलाई 2026 को अर्हता तिथि निर्धारित की है। इस तिथि तक 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने वाले सभी युवा मतदाता के रूप में अपना नाम दर्ज करवा सकेंगे। अभियान के अंतर्गत 15 जून से 14 जुलाई 2026 तक बीएलओ घर-घर जाकर मतदाताओं का सत्यापन करेंगे, एन्यूमरेशन फॉर्म भरवाएंगे, फोटो एवं अन्य विवरण अपडेट करेंगे तथा आवश्यक दस्तावेजों का सत्यापन करेंगे। सभी बीएलओ अपने साथ कम से कम 30 खाली फॉर्म-6 और घोषणा पत्र साथ रखेंगे ताकि मौके पर ही नया मतदाता बनने के इच्छुक नागरिकों को फॉर्म उपलब्ध कराया जा सकें।

बीएलओ के आगमन पर करें सहयोग

एसडीएम ने कहा कि नागरिकों को चाहिए कि वे बीएलओ के आगमन पर पूरा सहयोग करें तथा सही एवं प्रमाणित जानकारी उपलब्ध करवाएं। उन्होंने मिडिया के माध्यम से विशेष रूप से आग्रह किया कि प्रत्येक मतदाता दो रंगीन पासपोर्ट साइज फोटो तैयार रखे, जिससे मतदाता सूची में फोटो अपडेट करने की प्रक्रिया सुगमता से पूरी की जा सके।

खबर संक्षेप

गर्मी में पानी पिलाना पुण्य का कार्यः रमेश

ओढां। इच्छापूर्ण शनिदेव मंदिर सेवा समिति की ओर से ज्येष्ठ मास कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी दिन शनिवार को मंदिर के आगे ठंडे मीठे पानी की छबील लगाई गई। मंदिर के पुजारी ने बाबा शनिदेव को भोग लगाने के बाद छबील शुरू की और भीषण गर्मी से प्यासे राहगीरों, बच्चों व गांववासियों ने ठंडा मीठा जल पीकर अपनी प्यास बुझाई। इस अवसर पर मंदिर के मुख्य सेवक रमेश गर्ग सिरसा ने कहा कि शनि देव मंदिर में ठंडे मीठे जल की छबील लगाना अत्यंत पुण्यकारी काम है। गर्मी के दिनों में प्यासों को पानी पिलाना मानव सेवा का सबसे उत्तम रूप है, शनिदेव की क्रूर दृष्टि को शांत कर उनकी कृपा प्राप्त करने का सबसे अचूक उपाय है।

नवोदय में कक्षा 11वीं में रिक्त सीटों पर प्रवेश के लिए आवेदन आमंत्रित

फतेहाबाद। पीएम श्री जवाहर नवोदय विद्यालय, खारा खेड़ी में शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए कक्षा 11वीं विज्ञान व वाणिज्य संकाय में संभावित रिक्त सीटों पर प्रवेश हेतु पात्र अभ्यर्थियों से आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि 25 जून है। पूर्ण रूप से भरा हुआ आवेदन प्रपत्र विद्यालय में व्यक्तिगत रूप से जमा किया जा सकता है अथवा डाक द्वारा अंतिम तिथि से पहले विद्यालय में भेजा जा सकता है। अभ्यर्थी ने शैक्षणिक सत्र 2025-26 में कक्षा 10वीं उत्तीर्ण की हो तथा वह विद्यालय सीबीएसई अथवा किसी मान्यता प्राप्त राज्य शिक्षा बोर्ड से संबद्ध हो।

डीपीआरसी हॉल में रोजगार मेला 16 को

फतेहाबाद। जिला रोजगार कार्यालय द्वारा प्रदेश सरकार की 12 वर्षों की उपलब्धियों पर आधारित 20 जून तक चलने वाले अभियान के तहत 16 जून को लघु सचिवालय के निकट स्थित डीपीआरसी हॉल में रोजगार मेले का आयोजन किया जाएगा। रोजगार मेले में युवाओं को रोजगारपरक शिक्षा, विभिन्न सरकारी योजनाओं तथा कौशल विकास कार्यक्रमों की जानकारी प्रदान की जाएगी। मौके पर भारतीय स्टेट बैंक ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग विभाग तथा हरियाणा कौशल विकास निगम द्वारा युवाओं को स्वरोजगार और कौशल विकास से जुड़ी योजनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाएगी।

छह ग्राम हेरोइन सहित युवक दबोचा, केस दर्ज

सिरसा। एंटी नारकोटिक्स सेल पुलिस ने गश्त के दौरान गांव कुत्ताबढ़ क्षेत्र से एक युवक को 6 ग्राम 45 मिलीग्राम हेरोइन सहित गिरफ्तार किया है। एंटी नारकोटिक्स सेल के प्रभारी ने बताया कि एंटी नारकोटिक्स सेल की पुलिस टीम गश्त एवं अपराध रोकथाम गतिविधियों के तहत गांव कुत्ताबढ़ क्षेत्र में मौजूद थी। इसी दौरान एक युवक पैदल आता दिखाई दिया, जिसने पुलिस वाहन को देखकर अचानक वापस मुडक़र वहां से निकलने का प्रयास किया। नियमानुसार राजपत्रित अधिकारी की मौजूदगी में उसकी तलाशी ली गई, जिसके दौरान उसके कब्जे से 6 ग्राम 45 मिलीग्राम हैरोइन बरामद हुई।

अघोषित बिजली कटौती पर भड़के धारसूल के ग्रामीण

जाखल-कुलां मार्ग पर लगाया 3 घंटे जाम, जमकर की नारेबाजी

- निगम एसडीओ के आश्वासन के बाद बनी सहमति

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

फतेहाबाद। बिजली समस्या को लेकर रोड जाम करते ग्रामीण। *फोटो : हरिभूमि*

जिले के गांव धारसूल के पास शनिवार सुबह बिजली कटौती से परेशान ग्रामीणों का गुस्सा फूट पड़ा। आक्रोशित ग्रामीणों ने जाखल-कुलां मार्ग को पूरी तरह जाम कर दिया और नहर पुल पर सडक़ के बीचो-बीच बैठकर सरकार व बिजली निगम के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। करीब 3 घंटे तक चले इस विरोध प्रदर्शन के कारण मार्ग के दोनों ओर वाहनों की लंबी कतारें लग गई, जिससे राहगीरों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। बाद में बिजली निगम के एसडीओ और पुलिस अधिकारियों द्वारा जल्द समस्या के समाधान का आश्वासन दिए जाने के बाद ही ग्रामीण शांत हुए और जाम खोला गया। जाम लगाकर प्रदर्शन कर रहे ग्रामीण सुरेश, संदीप, मुकेश, संतोष और कमला ने अपनी परेशानी व्यक्त करते हुए कहा कि पिछले कई दिनों से गांव मां बिजली आपूर्ति पूरी तरह से बाधित है। इस भीषण गर्मी के मौसम में ग्रामीणों को बिना बिजली के रहने को मजबूर होना पड़ रहा है। बिजली न आने के कारण न केवल घरेलू कामकाज ठप हो गए हैं, बल्कि खेतों में फसलों की सिंचाई और अन्य कृषि कार्य भी बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि इस गंभीर समस्या को लेकर वे कई बार बिजली निगम के अधिकारियों को शिकायत दे चुके हैं, लेकिन बार-बार गुहार लगाने के बावजूद कोई समाधान नहीं हुआ। इसी लापरवाही से तंग आकर आखिरकार उन्हें मजबूरन सडक़ पर उतरना पड़ा।

एएसआई जितेंद्र सिंह ने संभाली स्थिति

सडक जाम होने की सूचना मिलते ही कुलां चौकी इंचार्ज एएसआई जितेंद्र सिंह पुलिस टीम के साथ तुरंत मौके पर पहुंचे। स्थिति को संभालते हुए उन्होंने उच्चाधिकारियों को अवगत कराया, जिसके बाद बिजली निगम के एसडीओ संजय सिंगला और सदर थाना प्रभारी बीर सिंह भी मौके पर पहुंचे। जाम के चलते कुलां और जाखल के बीच यात्रा कर रहे वाहन चालकों को भारी असुविधा हुई और लोगों को गंतव्य तक पहुंचने के लिए वैकल्पिक व लिंक रास्तों का उपयोग करना पड़ा। मौके पर पहुंचे सदर थाना प्रभारी बीर सिंह, एसडीओ संजय सिंगला और एएसआई जितेंद्र सिंह ने प्रदर्शनकारी ग्रामीणों के साथ काफी देर तक बातचीत की और उन्हें समझाने का प्रयास किया। अधिकारियों ने ग्रामीणों को भरोसा दिलाया कि गांव में बिजली आपूर्ति की समस्या को प्राथमिकता के आधार पर ठीक किया जाएगा और अघोषित कटों से राहत दी जाएगी। पुलिस व बिजली निगम के अधिकारियों ने बताया कि बातचीत के बाद ग्रामीणों ने शांतिपूर्वक जाम खोल दिया है और जल्द ही बिजली व्यवस्था को सुचारू कर दिया जाएगा।

बेहतरीन गेंदबाजी के चलते आयुष बने मैन ऑफ द मैच

फतेहाबाद क्रिकेट लीग के दूसरे मैच में स्ट्राइकर्स ने दी राइजिंग स्टार्स को मात

- तीसरे मैच में राइजिंग स्टार्स ने 19 रन से जीता रोमांचक मुकाबला

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

फतेहाबाद। मैन ऑफ द मैच को सम्मानित करते अतिथिगण। *फोटो : हरिभूमि*

एमएम कॉलेज के खेल मैदान में चल रही फतेहाबाद क्रिकेट लीग का दूसरा मैच फतेहाबाद राइजिंग स्टार्स और फतेहाबाद स्ट्राइकर्स के बीच खेला गया, जिसका उद्घाटन पूर्व क्रिकेटर वरुण मित्तल ने टॉस करवाकर किया। इस मैच में फतेहाबाद राइजिंग स्टार्स ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। स्ट्राइकर्स के गेंदबाज आयुष की घातक गेंदबाजी के आगे राइजिंग स्टार्स की टीम 21 ओवरों में महज 92 रनों पर ही सिमट गई। जीत के लिए मिले 93 रनों के आसान लक्ष्य को फतेहाबाद स्ट्राइकर्स ने महज 16.5 ओवरों में 2 विकेट खोकर हासिल कर लिया और 8 विकेट से मैच जीत लिया। बेहतरीन गेंदबाजी के लिए आयुष को मैन ऑफ द मैच चुना गया।

लीग का तीसरा मुकाबला फतेहाबाद राइजिंग स्टार्स और फतेहाबाद सुपर किंग्स के बीच खेला गया। इस मैच में भी राइजिंग स्टार्स ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी चुनी और निर्धारित 40 ओवरों में 9 विकेट खोकर 164 रनों का मजबूत स्कोर खड़ा किया। टीम के लिए काव्या ने नाबाद 46 रनों की बेहतरीन पारी खेली। चुनौतीपूर्ण लक्ष्य का पीछा करने उतरी फतेहाबाद सुपर किंग्स की टीम 33.1 ओवरों में 145 रन बनाकर ऑलआउट हो गई, जिसके चलते फतेहाबाद राइजिंग स्टार्स ने यह मैच 19 रनों से अपने नाम कर लिया। मैच के बाद मुख्य अतिथि रवि दत्त द्वारा काव्या को उनके शानदार ऑलराउंड प्रदर्शन के लिए मैन ऑफ द मैच की ट्रॉफी से नवाजा गया।

बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान के तहत किया जागरूक

चोपटा। चौधरी देवीलाल पार्क नाथूसरी कला में स्वास्थ्य विभाग के तत्वावधान में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान के तहत कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि नाथूसरी कलां की सरपंच रीटा जगतपाल कासनियां रहीं। सरपंच रीटा कासनियां ने महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य लड़कियों की घटती संख्या को रोकना और उनकी शिक्षा को बढ़ावा देना है। एएनएम स्वीटी और मलेरिया वर्कर लालचंद ने ब लिंगानुपात के बारे में जागरूक किया। इस दौरान जागरूकता रैली निकाली गई और बेटी बचाओ बेटी पढाओ अभियान को बल दिया गया। इस मौके पर आंगनवाड़ी वर्कर सुमन देवी, सीता, आशा वर्कर अनु, सविना, सरोज, इंद्रा व मोनिका ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग दिया।

संस्थान का उद्देश्य युवाओं को रोजगार योग्य बनाना : कंबोज

- आईटीआई प्राचार्य बुधराम कंबोज को मिला राज्य स्तर पर तीसरा स्थान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा

राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के प्रधानाचार्य बुधराम कंबोज को राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों के प्रधानाचार्यों में उत्कृष्ट नेतृत्व, संस्थागत विकास, प्रशिक्षण प्रबंधन एवं तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए राज्य स्तर पर तृतीय स्थान प्राप्त होने पर संस्थान के समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। यह सम्मान उनके कुशल नेतृत्व, अनुशासन, समर्पण एवं संस्थान के सर्वांगीण विकास के लिए किए गए निरंतर प्रयासों का परिणाम है। उनके मार्गदर्शन में राजकीय आईटीआई ने प्रशिक्षण, कौशल विकास, प्लेसमेंट तथा विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में उल्लेखनीय उपलब्धियां प्राप्त की हैं। प्रधानाचार्य बुधराम कंबोज ने कहा कि संस्थान का मुख्य उद्देश्य युवाओं को गुणवत्तापूर्ण तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें रोजगार योग्य बनाना है। संस्थान में संचालित विभिन्न व्यवसायों में प्रशिक्षण कार्य निर्धारित पाठ्यक्रम एवं आधुनिक तकनीकों के अनुरूप प्रभावी ढंग से संचालित किया जा रहा है, जिससे प्रशिक्षार्थियों के कौशल एवं दक्षता में निरंतर वृद्धि हो रही है। उन्होंने बताया कि वर्तमान शैक्षणिक सत्र के लिए प्रवेश प्रक्रिया जारी है तथा अधिक से अधिक युवाओं को तकनीकी शिक्षा से जोडने के लिए प्रवेश जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। साथ ही प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों को उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप व्यावहारिक एवं रोजगारपरक प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जा रहा है।

तकनीकी शिक्षा का लाभ उठाएं विद्यार्थी

प्रधानाचार्य ने कहा कि संस्थान द्वारा विभिन्न औद्योगिक प्रतिष्ठानों एवं कंपनियों के साथ समन्वय स्थापित कर दोहरी प्रशिक्षण प्रणाली, कैंपस प्लेसमेंट, रोजगार मेले, अप्रेंटिसशिप कार्यक्रम तथा उद्योग भ्रमण जैसी गतिविधियों का नियमित आयोजन किया जा रहा है, जिससे प्रशिक्षार्थियों को रोजगार एवं स्वरोजगार के बेहतर अवसर प्राप्त हो रहे हैं। संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने कहा कि बुधराम कंबोज की यह उपलब्धि न केवल राजकीय आईटीआई सिरसा, बल्कि पूरे जिले के लिए गौरव का विषय है। प्रधानाचार्य ने प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट कार्य से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि सभी के सामूहिक सहयोग से संस्थान उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त कर रहा है। उन्होंने युवाओं से अधिक से अधिक संख्या में आईटीआई में प्रवेश लेकर तकनीकी शिक्षा एवं कौशल प्रशिक्षण का लाभ उठाने का आह्वान किया।

रक्तदान पुण्य का कार्य, एक यूनिट दे सकती है नया जीवन : राजा राम

- रक्तदान शिविर में 70 लोगों ने स्वेच्छा से लिया भाग

हरिभूमि न्यूज ▶▶ चौपटा

चौपटा। शिविर में रक्तदान करते लोग। *फोटो : हरिभूमि*

नोहर रोड स्थित रिदम हॉस्पिटल द्वारा स्थापना दिवस के उपलक्ष्य पर रक्त दान कैंप का आयोजन किया गया। रक्त दान कैंप का उद्घाटन डॉक्टर राकेश कुमार के पिता राजा राम कस्वां ने किया। राजा राम ने कहा कि रक्त दान पुण्य का काम है। एक यूनिट रक्त किसी को नया जीवन दान दे सकता है। इस रक्तदान कैंप के आयोजन में डॉक्टर राकेश कुमार कसवां ,लाइफ लाईन लेबोरेट्री से डॉक्टर मनोज कुमार, मास्टर दिनेश कुमार, मास्टर बंशी लाल, डॉक्टर जगदीप,कुलवंत संदीप कुमार, पवन कुमार, रजनीश राय साहेब ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। सुमित बैनीवाल ने विशेष अतिथि के रूप में शिरकत की। वरदान कैंप से सीनियर टेक्निकल ऑफिसर डाक्टर जगदीश राय, टेक्निकल सुपरवाइजर अंकुश तलवाड़,नर्सिंग ऑफिसर पूनम शर्मा,टेक्नीशियन भरत , अंकज,बलवान आदि रहे।

न्यूजीलैंड में भारत की गोलपोस्ट संभालेंगी खिलाड़ी सविता पूनिया

- 15 से 20 जून तक टूर्नामेंट में देश की महिला टीम लेंगी हिस्सा

हरिभूमि न्यूज ▶▶|सिरसा

अर्जुन अवार्ड से सम्मानित हॉकी खिलाड़ी सविता पूनिया अब नेशंस कप खेलेगी। यह महिलाओं का नेशंस कप न्यूजीलैंड में जून माह में आयोजित होना है। ये खेल 15 जून से शुरू होंगे और 20 जून तक चलेंगे। इस टूर्नामेंट में पांच से छह मैच होंगे, जिसमें जीतना आवश्यक होगा। हॉकी खिलाड़ी सविता पूनिया के पिता महेंद्र सिंह ने बताया, यह नेशंस कप आठ देशों का होता है। इसमें भारत से महिला हॉकी टीम भाग लेने के लिए गई हुई है। इसी नेशंस कप की जीत ही सविता का एशियन गेम्स तक खेलना निर्भर है। इस गेम्स के बाद सविता इंडियन टीम में बतौर खिलाड़ी खेलेंगी। सविता के पिता महेंद्र सिंह के अनुसार, ये एशियन गेम्स सितंबर माह में चीन में होने हैं। इसकी तैयारी न्यूजीलैंड में चल रही है। इसके बाद इंडिया हॉकी टीम में चयन किया जाएगा। परिजनों के अनुसार, सविता का अगला लक्ष्य एशियन गेम्स है, जिसमें देश का प्रतिनिधित्व करेगी। सविता पूनिया नेशंस कप के बाद सिरसा आएंगी। न्यूजीलैंड में 21 जून तक ये नेशंस गेम्स चलेंगे। इसके बाद 24-25 तारीख तक सविता सिरसा अपने घर पहुंचेगी।

बाल्यकाल में हरि भजन करने से भगवान और मोक्ष की प्राप्ति संभव : सुगन शर्मा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

- नानीबाई मायरा कथा का भव्य कलश के साथ हुआ शुभारंभ

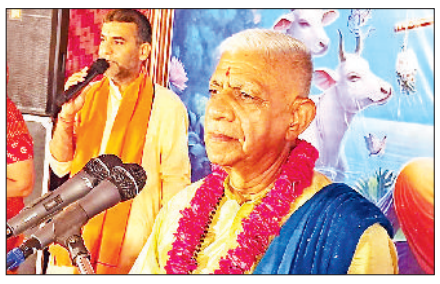

सिरसा। नानीबाई का मायरा कथा करते पंडित सुगम शर्मा।

योगाचार्य पंडित सीताराम के सानिध्य में नानीबाई का मायरा कथा का शुभारंभ भव्य कलश पूजन से हुआ, जिसमें भक्तजनों ने कलश पूजन किया। पंडित सुगन शर्मा ने संगीतमयी नानीबाई के मायरे की पावन कथा सुनाते हुए भगवान के परम भक्त नरसी जी के वाल्यकाल का वर्णन किया। उन्होंने बताया कि कैसे नरसी जी कि दादी, जिन्हें डोकरी कहा जाता था ने बाल्यकाल से ही नरसी जी को भगवान कि पूजा, संतों के प्रवचन सुनने में रूचि रखने की शिक्षा दी। पंडित जी ने संतों की संगत व भगवान के भजन की महिमा बताई और कहा कि जो बाल्यकाल में हरि भजन करता है, उसे भगवान की प्राप्ति इसी जन्म में होती है, जो जवानी में हरि भजन करता है, उसका बुढ़ापा सुधर जाता है और जो बुढ़ापे में हरि को सुमिरता है, उसका अगला जन्म सुधर जाता है। इसलिए जितनी जल्दी हो सके, हरि भजन में लगना चाहिए। संतों की कृपा हुई तो गूंगे बहरे नरसी भगत जी बोलने व सुनने लगे और भगवान के भजन में ऐसे लगे कि भगवान स्वयं प्रकट हुए। पंडित जी ने बहुत ही सुंदर-सुंदर भजनों के माध्यम से नरसी जी का चरित्र गान किया।

पाठ्यक्रम में सिख गुरुओं के इतिहास को शामिल करना सराहनीयः डॉ. केहरवाला

- बच्चे बंदा बहादुर के त्याग, बलिदान व आदर्शों से होंगे रूबरू

हरिभूमि न्यूज ▶▶|सिरसा

डॉ. गंगा सागर केहरवाला।

प्रदेश में मनाए गए गुरु तेगबहादुर के 350वें शहीदी समागम के अवसर पर मुख्यमंत्री द्वारा सिख गुरुओं का इतिहास 8वीं कक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल करने की कि गई घोषणा को प्रदेश के मुख्यमंत्री द्वारा अमलीजामा पहनाने का भाजपा के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य एवं जिला प्रवक्ता डॉ. गंगा सागर केहरवाला ने स्वागत योग्य व ऐतिहासिक कदम बताया है। जारी बयान में केहरवाला ने कहा कि सरकार के इस फैसले से स्कूली बच्चे सिख गुरुओं के साथ-साथ बाबा बन्दा सिंह बहादुर जी के त्याग, बलिदान और आदर्शों से रूबरू होंगे। उन्होंने कहा कि गुरु नानक देव से लेकर गुरु गोविंद सिंह तक सभी गुरुओं ने हमेशा मा न व ता , समानता, सेवा, करुणा, भाईचारे और सामाजिक न्याय का ही संदेश दिया है। सभी गुरुओं ने समाज को जाति, धर्म और वर्ग के भेदभाव से ऊपर उठकर मानव कल्याण के लिए कार्य करने के लिए ही पेरित किया था। केहरवाला ने कहा कि सिख गुरुओं का जीवन केवल एक समुदाय की धरोहर नहीं, बल्कि स पूर्ण राष्ट्र के लिए प्रेरणा स्रोत है।

दो सत्रों में होती है इग्नू परीक्षाएं

सिरसा। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय इग्नू की जून-जुलाई 2026 सत्रों की परीक्षाएं जारी हैं। इसी के अंतर्गत इग्नू परीक्षा केंद्र नेशनल कॉलेज ऑफ एजुकेशन सिरसा में परीक्षाओं का आयोजन शांतिपूर्वक हो रहा है। यह परीक्षाएं सुबह व शाम दो सत्रों में आयोजित होती हैं, जिनकी समयावधि सुबह दस बजे से एक बजे तक व शाम दो बजे से पांच बजे तक रहती है। परीक्षा के दौरान समय-समय पर क्षेत्रीय अध्ययन केंद्र करनाल द्वारा परीक्षा केंद्र का ओचिक निरीक्षण किया जाता है। जिसके तहत सहनिदेशक डॉ. अमित जैन द्वारा परीक्षा केंद्र पहुंचकर परीक्षा तैयारियों व परीक्षा योजना की कार्यप्रणाली का विस्तृत अवलोकन किया। इसके अलावा निदेशक डॉ. धर्मपाल क्षेत्रीय अध्ययन केंद्र करनाल द्वारा समय समय पर डिजिटल माध्यम से परीक्षाओं के सुचारू आयोजन के लिए आवश्यक दिशा निर्देश प्रेषित किए जाते हैं व इसके साथ साथ परीक्षा के शुरू होने व समापन के समय परीक्षा केंद्र अधीक्षक से आवश्यक जानकारी प्रतिपुष्टि के रूप में ली जाती है ताकि व्यवधान को समय रहते दूर किया जा सके।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, 783, पी.एल.ए., नजदीक टाउन पार्क, हिसार
फोन : 9315429403, 8291554800, 7988727916

गांव गोरीवाला में नशे के दुष्प्रभावों के खिलाफ महापंचायत

नशे के खिलाफ सामाजिक साझेदारी बड़ा हथियारः एसपी

एसपी बोले, मेडिकल संचालक निर्धारित नियमों के अनुसार करें दवाओं का विक्रय

हरिभूमि न्यूज ▶▶|डबवाली

सिरसा। बैठक को संबोधित करते एसपी जसलीन कौर।

डबवाली की पुलिस अधीक्षक जसलीन कौर ने कहा कि नशा और अपराध के विरुद्ध लड़ाई तभी सफल हो सकती है जब जागरूक जनता और पुलिस मिलकर कार्य करें। एसपी शनिवार को गांव गोरीवाला में नशे के खिलाफ आयोजित महापंचायत को संबोधित कर रही थी। एसपी ने मेडिकल संचालकों के विशेष रूप से प्रतिबंधित दवाओं की अवैध बिक्री, नशीली दवाओं के दुरुपयोग तथा युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति पर चर्चा की। उन्होंने निर्देश दिए कि मेडिकल संचालक केवल निर्धारित नियमों के अनुसार ही दवाओं का विक्रय करें तथा किसी भी संदिग्ध व्यक्ति अथवा गतिविधि की सूचना तुरंत पुलिस को दें। उन्होंने कहा कि कोई भी मेडिकल संचालक नशा तस्करी जैसी अवैध गतिविधियों में पाया जाता है, तो उसे किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा और उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

डोर टू डोर चलाया अभियान

महापंचायत में गांव के गणमान्य नागरिकों से नशे की गिरफ्त में आए व्यक्तियों को उपचार एवं पुनर्वास सेवाओं से जोडने में सहयोग करने का भी आह्वान किया। एसपी ने कहा कि नशा मुक्ति टीम लगातार इस कार्य में पूरी लगन के साथ लगी हुई है। गांव-शहर में डोर टू डोर अभियान चलाकर नशा पीड़ितों की पहचान, चिकित्सकों से काउंसलिंग व उपचार उपलब्ध करवाया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप कई नशा पीड़ितों ने नशे को सदा के लिए अलविदा कहते हुए नवजीवन में प्रवेश किया है, जो अन्य नशे से ग्रस्त व्यक्तियों के लिए प्रेरणास्रोत व उम्मीद की किरण बने हुए हैं। उन्होंने कहा कि पुलिस द्वारा नशा तस्करों, अपराधियों एवं समाज विरोधी तत्वों के खिलाफ लगातार विशेष अभियान चलाए जा रहे हैं। साथ ही गांवों में जागरूकता कार्यक्रम, जनसंवाद, खेल गतिविधियों एवं सामाजिक अभियानों के माध्यम से युवाओं को नशे से दूर रखने व शिक्षा, खेलकूद व समाज कल्याण के कार्यों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

कुरुक्षेत्र की घटना बेहद शर्मनाकः कृष्णा फौगाट

सिरसा। महिला कांग्रेस की जिलाध्यक्ष कृष्णा फौगाट ने कुरुक्षेत्र में नाबालिग के साथ दुराचार के मामले पर गहरा दुख और रोष व्यक्त करते हुए कहा कि यह घटना मानवता को शर्मसार करने वाली है। फौगाट ने शनिवार को जारी बयान में कहा कि चिकित्सक ने अपने पेशे की गरिमा और मरीज के विश्वास को तोड़ते हुए जघन्य अपराध किया गया है, उसके खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। वरिष्ठ कांग्रेस नेत्री ने कहा कि डॉक्टर का पेशा सेवा, विश्वास और संवेदनशीलता का प्रतीक माना जाता है। ऐसे में यदि कोई व्यक्ति इस पवित्र पेशे का दुरुपयोग करता है तो उसे किसी भी प्रकार की रियायत नहीं मिलनी चाहिए। उन्होंने सरकार से मांग की कि आरोपी चिकित्सक को कठोर सजा दिलाई जाए।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 14 जून 2026

रिलेशनशिप का नया ट्रेंड
डिजिटल ब्वॉयफ्रेंड-गर्लफ्रेंड

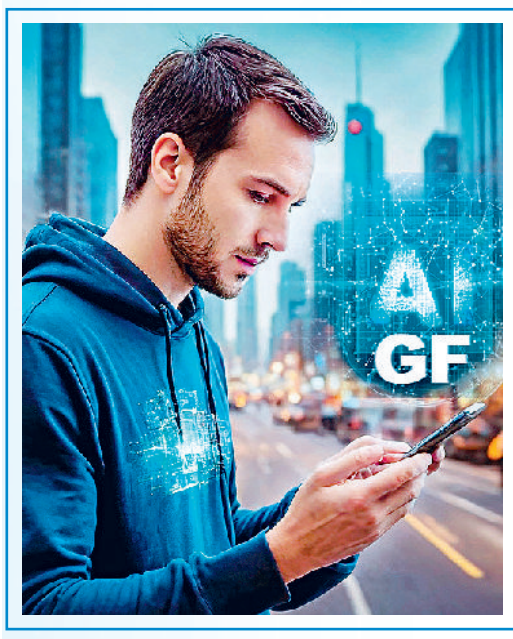

हाल के वर्षों में एआई ने अनेक प्रोफेशंस में जबर्दस्त बदलाव कर दिया है। अब प्रोफेशंस से भी आगे बढ़कर रिलेशनशिप में भी इसका दखल बढ़ने लगा है। इसका प्रमाण है, रियल के बजाय डिजिटल पार्टनर बनाने का बढ़ता ट्रेंड। यह ट्रेंड क्या है, यह क्यों बढ़ रहा है और आने वाले समय में इसके किस तरह के असर हम सभी को देखने को मिल सकते हैं, इसका डिटेल्ड एनालिसिस।

{ कवर स्टोरी / लोकमित्र गौतम }

भले ही आज यह बात आपको थोड़ा असहज कर सकती है, लेकिन यह सच है कि रिलेशनशिप का नया ट्रेंड तेजी से सामने आ रहा है, वो है डिजिटल गर्लफ्रेंड-ब्वॉयफ्रेंड। डिजिटल गर्लफ्रेंड और डिजिटल ब्वॉयफ्रेंड (जीएफ/बीएफ) कोई साधारण ट्रेंड नहीं है, बल्कि इंसानी रिश्तों के ढांचे में अभूतपूर्व बदलाव की शुरुआत है।

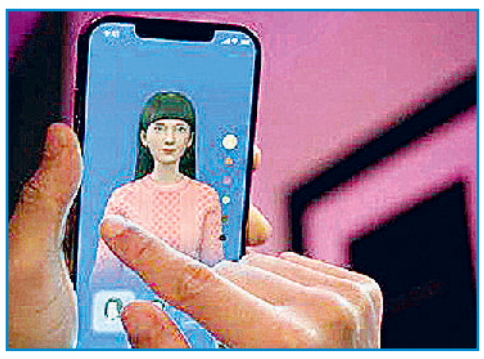

रियल पार्टनर जैसी फीलिंग

आज एआई आधारित एप्स और विभिन्न प्लेटफॉर्म जैसे रिपेलिका और करेक्टर एआई मौजूद हैं, जो यूजर के साथ उसी तरह रोमांटिक, भावनात्मक या निजी बातचीत करते हैं, जैसे ब्वॉयफ्रेंड या गर्लफ्रेंड आपस में करते हैं। ये आपकी पसंद ही नहीं भावनाओं को भी समझते हैं, आपकी बातों पर प्रतिक्रिया देते हैं और पर्सनल पार्टनर जैसा अनुभव देते हैं।

करोड़ों लोग हैं एक्टिव

डिजिटल गर्लफ्रेंड और डिजिटल ब्वॉयफ्रेंड कोई रेयर या एक्सेप्शनल फिनोमिना नहीं है। सच्चाई तो यह है कि अगर एआई कंपेनियनशिप एप्स के आंकड़ों को मानें तो इस समय दुनिया में 5 से 6 करोड़ जीएफ/बीएफ सक्रिय रूप में मौजूद हैं। पूरी दुनिया में 10 करोड़ से ज्यादा लोग ऐसे हैं, जो इनके साथ किसी न किसी रूप से चैटबॉट्स के जरिए जुड़ते हैं। इनमें सिर्फ रिपेलिका के ही 3-4 करोड़ यूजर हैं, जबकि करेक्टर एआई के 2 करोड़ सिर्फ मंथली एक्टिव यूजर हैं। सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि दुनिया के 21 फीसदी वयस्क एआई कंपेनियनशिप का इस्तेमाल कर चुके हैं और 72 फीसदी किशोर कम से कम एक बार ऐसे एआई से बातचीत की है। मतलब यह कि अब यह कुछ थोड़े से लोगों का शौक या प्रयोग भर नहीं है बल्कि यह बड़ी जनसंख्या का न्यू नॉर्मल व्यवहार है।

अपने देश में भी बढ़ रहा ट्रेंड

भारत भी इस मामले में पीछे नहीं है। हालांकि भारत के अलग से सटीक आधिकारिक आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन इसका बढ़ता ट्रेंड साफ तौर पर देखा जा सकता है। और ऐसा हो भी क्यों न, आखिर भारत दुनिया का सबसे बड़ा इंटरनेट यूजर देश है। भारत में एक अरब से ज्यादा मोबाइल फोन इस्तेमाल में हैं और इनमें 80 करोड़ से ज्यादा में इंटरनेट का इस्तेमाल होता है। अगर एआई एप्स डाउनलोड ग्रोथ 2023-24 को देखें, तो भारत में इसकी रफ्तार 1400 फीसदी रही है यानी, हाल के सालों में भारत में एआई एप्स को डाउनलोड करने की रफ्तार 14 गुना तक बढ़ी है। क्योंकि भारत में मोबाइल फोन के सबसे बड़े उपभोक्ता 18 से 30 साल के युवा हैं। इसलिए भी भारत में एआई कंपेनियनशिप की मांग अविश्वसनीय रफ्तार से बढ़ रही है। क्योंकि इंटरनेट इस्तेमाल करने वाला यही वर्ग (18-30) सबसे बड़ा इंटरनेट यूजर वर्ग है। इसके बावजूद भी यह कहा जा सकता है कि भारत में यह सिलसिला अभी शुरुआती चलन में है, भले इसकी रफ्तार बहुत तेज हो।

इस ट्रेंड के बढ़ने की वजहें

सवाल है, आखिर इंसानों को डिजिटल जीएफ और बीएफ तक जाने की जरूरत ही क्यों पड़ी? यानी हम आखिर यहां पहुंचे क्यों और कैसे? इसका सबसे बड़ा कारण है लोगों में बढ़ता अकेलापन। शहरी जीवन, काम का दबाव, टूटते सामाजिक नेटवर्क और भावनात्मक सहारा ढूंढ़ते युवा। वास्तव में यही वजहें हैं, जिनके चलते पिछले कुछ सालों में ही डिजिटल जीएफ/बीएफ की रफ्तार तेजी से बढ़ी है। असली रिश्तों में लगातार बढ़ती असहमति, समझौते और जिम्मेदारियां एआई रिश्तों की तरफ हमें मोड़ रही हैं, क्योंकि वहां इस तरह की दुश्वारियां या तो नहीं हैं या इतनी नहीं है कि परेशान करके रख दें। क्योंकि एआई रिश्ते 'कंट्रोल्ड' होते हैं और उनको संभालना आसान होता है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह भी है कि एआई अब इस कदर एडवांस हो चुका है कि वह लोगों को 'सोचने और समझने' का भी भ्रम पैदा कर रहा है।

रियल रिलेशन होंगे वीक

इस उभरते नए डिजिटल रिलेशन को लेकर गंभीर सवाल यह है कि अगर इस सिलसिले को जल्द रोका न गया, तो क्या होगा? भले ही अभी यह ट्रेंड रोमांचित कर रहा है, लेकिन सच है कि इससे हमारे जैविक रिश्ते आने वाले दिनों में बेहद कमजोर हो सकते हैं। अगर संबंध विशेषज्ञों की मानें तो यह सिलसिला इसी तरह बेकाबू आगे बढ़ता रहा तो असली रिश्ते में दूरियां बढ़ने लगेंगी। हममें से ज्यादातर लोगों के रिश्तों के नाम एआई पार्टनर होंगे, क्योंकि एआई पार्टनर झगड़ा नहीं करते और हमेशा आपकी हां में हां मिलाते हैं। इससे असली रिश्ते जटिल लगने लगते हैं और एआई रिश्ते आकर्षक हो जाते हैं। जो लोग हर दिन एआई के साथ एक से दो घंटे के लिए संपर्क में रहते हैं, उन्हें एआई से लगाव हो जाता है। वे उसे अपने पार्टनर के रूप में स्वीकार करने लगते हैं। यह वैसा ही है, जैसे सोशल मीडिया एडिक्शन। पर, यह उससे भी एक कदम आगे का एडिक्शन है, क्योंकि इससे हमारे न सिर्फ भावनात्मक रिश्ते पर चोट लग रही है बल्कि इसके कारण हमारे समाज का सदियों से मौजूद पारंपरिक ढांचा दरकने लगा है।

मेंटल हेल्थ पर बुरा असर

डिजिटल रिलेशन का असर सिर्फ भावनात्मक रिश्तों तक ही सीमित नहीं रहता है बल्कि बढ़ते जीएफ/बीएफ ट्रेंड के कारण हमारे युवाओं के मेंटल हेल्थ पर भी गंभीर असर पड़ता है, क्योंकि शुरुआत में ये डिजिटल ब्वॉयफ्रेंड या गर्लफ्रेंड भले राहत देते हों, लेकिन जब आप लगातार इनके टच में रहते हैं या इनका इस्तेमाल करते हैं, तो ये न केवल आपको अकेलेपन के दलदल में खींच ले जाते हैं बल्कि आपको कई तरह की हताशाओं और निराशाओं से भी भर देते हैं। अकसर एआई कंपेनियनशिप के साथ जो लोग खुश होते हैं, उन्हें नजदीक के इंसानों से रिश्ते बनाने में बड़ी मुश्किल लगती है और अगर किसी तरह से इनके रिश्ते बन भी गए, तो उन्हें यह रिश्ते बहुत पसंद नहीं आते। *

बढ़ सकती हैं कई तरह की समस्याएं

डिजिटल जीएफ/बीएफ का बढ़ता ट्रेंड सचमुच में डरावना है। इससे आने वाले समय में कई समस्याएं सामने आ सकती हैं। इसके बढ़ने से शादी और परिवार की संस्था कमजोर होगी। कस्टम पार्टनर की आदत यानी हम जैसा साथी चाहते हैं या दूसरे शब्दों में अपनी कल्पना के साथी की तलाश में रहने लगेंगे। अगर यह चलन इसी तरह तेजी से बढ़ता रहा, तो देश और दुनिया में अकेले रहने वाले लोगों की संख्या बहुत ज्यादा हो जाएगी। कई विशेषज्ञों के मुताबिक तो अगले दो-तीन दशकों में अकेले रहने वाले लोग, साथ में रहने वाले लोगों से भी ज्यादा हो सकते हैं। इससे सामाजिक दूरी भी बढ़ेगी। यह ट्रेंड मानव समाज के सामने एक गंभीर चुनौती बन सकता है।

इंसानी सभ्यता की शुरुआत से ही हमेशा जवान, खूबसूरत दिखने की चाहत रही है। इसे पाने के लिए नेचुरल तरीकों से लेकर, साइंस, दवाएं और अब एआई तक का यूज किया जा रहा है। उम्मीद है कि जल्द ही खूबसूरती का कोई पर्मानेंट सॉल्यूशन हमें मिल जाएगा।

पर्मानेंट खूबसूरती की चाहत
जल्द मिल सकता है सॉल्यूशन

{ टेक्नोसाइंस / प्रतिमा अरोड़ा }

इंसानी खूबसूरती का क्या कोई स्थायी और सार्वभौमिक फार्मूला हो सकता है? 19वीं शताब्दी से ही विज्ञान इस सवाल का जवाब ढूंढ़ रहा है। आधुनिक विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी, जेनेटिक्स और कॉस्मेटिक मेडिसिन का अब लगभग यह केंद्रीय विषय बन चुका है कि दुनिया भर के इंसानों के लिए एक सार्वभौमिक खूबसूरती का पैमाना क्या हो और इसे पूरी दुनिया के स्तर पर संभव कैसे बनाया जाए? यह सोच और यह खोज इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि इंसान सदियों से सुंदर होने के उपाय खोजता रहा है। कभी प्राकृतिक नुस्खों से, कभी शल्य चिकित्सा से, कभी जीन एडिटिंग से, तो अब एआई आधारित तकनीकों से भी।

खूबसूरती की खोज की शुरुआत

19वीं सदी के अंत से ही वैज्ञानिक इंसान की स्थायी खूबसूरती का समाधान खोज रहे हैं। विशेषकर जब से शरीर रचना विज्ञान यानी एनाटॉमी और त्वचा विज्ञान यानी डर्मेटोलॉजी का व्यवस्थित विकास हुआ। तभी से विज्ञान कुछ बातों पर फोकस कर रहा है। जैसे-त्वचा की संरचना का विज्ञान क्या है और इसे हमेशा जवान कैसे बनाए रखा जा सकता है? आखिर उम्र बढ़ने की प्रक्रिया क्या है और इसे कैसे रोका जा सकता है? हार्मोन और सौंदर्य के बीच क्या संबंध हैं, क्या हार्मोन में ही इंसानी सौंदर्य का रहस्य छिपा है? 20वीं सदी के मध्य में प्लास्टिक सर्जरी के बाद कॉस्मेटिक सर्जरी लगभग चमत्कार की तरह उभरकर सामने आई। इस दौर में अनेक जैविक शोधों से यह स्पष्ट हुआ कि त्वचा का रंग, बालों की बनावट, चेहरे की आकृति और झुर्रियां इन सबका बड़ा हिस्सा जीन द्वारा नियंत्रित होता है। अतः जीन नियंत्रण का विज्ञान समझ लिया जाए तो एक तरह से खूबसूरती पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

सौंदर्य का केंद्र जेनेटिक्स

साल 2003 में ह्यूमन जीनोम प्रोजेक्ट लांच हुआ और यह विज्ञान के लिए मील का पत्थर साबित हुआ। इससे यह समझ में आया कि मानव शरीर में मौजूद हजारों जीन, हमारे शरीर की अलग-अलग संरचनाओं और गुणों के लिए जिम्मेदार हैं। इस शोध से पता चला त्वचा की मोटाई का कारण क्या है? कोलेजन का उत्पादन कैसे होता है? उम्र बढ़ने की गति क्या होती है? बाल झड़ते क्यों हैं? केंद्रीय रूप से इन सबके पीछे विशिष्ट कारण सिर्फ जीन हैं। आज वैज्ञानिक जीनों की पहचान करके एजिंग के रहस्य का पर्दाफाश करने में लगे हैं। इस शोध और लगातार कोशिश का निष्कर्ष यह है कि सैद्धांतिक रूप से जीन स्तर पर बदलाव करके उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा किया जा सकता है।

प्रभावी है कॉस्मेटिक टेक्नोलॉजी

हालांकि कॉस्मेटिक टेक्नोलॉजी अभी अस्थायी ही है। लेकिन निश्चित रूप से यह सौंदर्य विज्ञान का सबसे विकसित क्षेत्र है और एस्थेटिक मेडिसिन को भविष्य इंसान की खूबसूरती को स्थायी रूप देने में सक्षम माना जा रहा है। आज इसी विज्ञान के चलते-बोटोक्स, डर्मल फिलर्स, लेजर स्किन रिसर्फेसिंग तथा केमिकल पिल्स जैसी प्रक्रियाओं से लोग अपनी झुर्रियां कम कर रहे हैं। त्वचा को चिकनी, मुलायम और टाइट रख पाने में सफल हो रहे हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि चेहरे को पसंदीदा आकृति देने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि अभी यह 100 फीसदी संभव नहीं है, लेकिन हर गुजरते साल के साथ यह पहले से बेहतर होती जा रही है। इस बात का सबूत है कि बहुत जल्द इंसानी खूबसूरती का स्थायी समाधान बनकर कॉस्मेटिक टेक्नोलॉजी सामने आएगा।

जीन एडिटिंग में है भविष्य

साल 2012 के बाद जीन एडिटिंग तकनीक, जिसे सीआरआईएसपीआर-सीएएस-9 कहा जाता है, ने चिकित्सा जगत में क्रांति ला दी। इस तकनीक के जरिए वैज्ञानिक खराब जीन काट सकते हैं, नए जीन जोड़ सकते हैं, जीन के व्यवहार को नियंत्रित कर सकते हैं। ये सब सहूलियतें उम्मीद जता रही हैं कि भविष्य में इंसान गंभीर बीमारियों जैसे कैंसर, थैलेसीमिया और जेनेटिक डिसऑर्डर से पार पाने में सफल रहेगा। एजिंग के प्रभाव को धीमा किया जा सकता है, बालों के झड़ने को रोका जा सकता है, त्वचा को युवा बनाए रखने की स्थायी तरकीब ढूंढ़ी जा सकती है। लब्बोलुआब यह कि सिर्फ सुंदरता बढ़ाने के लिए नहीं बल्कि जीवन को गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए, जीन एडिटिंग की कवायद लगातार जारी है।

एआई और पर्सनलाइज्ड ब्यूटी

एआई आधारित सिस्टम के जरिए अब हम यह जान सकते हैं कि किसी व्यक्ति की त्वचा कितनी बूढ़ी है और वह किस रफ्तार से बूढ़ी हो रही है? वास्तव में इस सारी जानकारी को पर्सनलाइज्ड ब्यूटी प्लान के नाम से जानते हैं और इस प्लान के अस्तित्व में आने के बाद अब अलग-अलग इंसानों का स्वतंत्र रूप से खूबसूरत और स्वस्थ होना ज्यादा आसान और गारंटीड हुआ है। वैज्ञानिकों को भरोसा है कि अब खूबसूरती का स्थायी समाधान हासिल करने में बहुत देर नहीं है। *

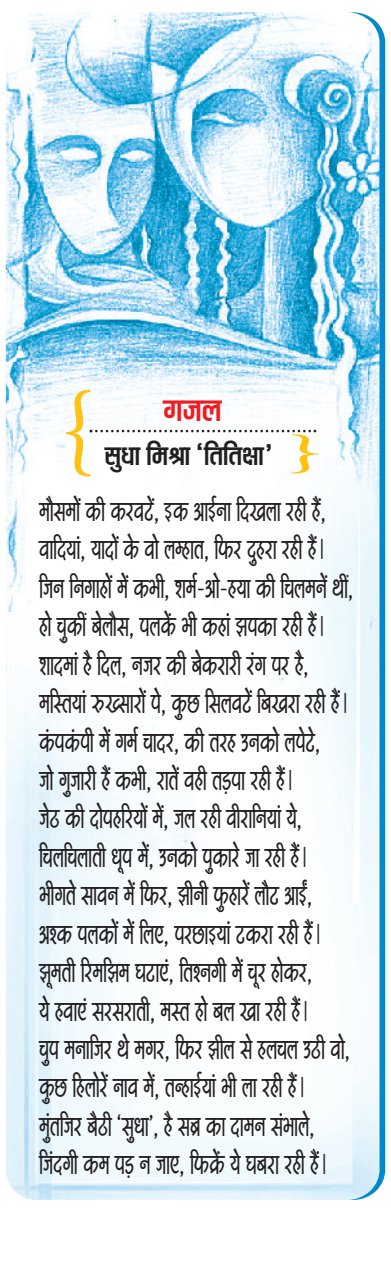

{ गजल / सुधा मिश्रा 'तितिक्षा' }

मौसमों की करवटें, इक आईना दिखला रही हैं,
वादियां, यादों के वो लम्हात, फिर दुहरा रही हैं।
जिन निगाहों में कभी, शर्म-ओ-हया की थिलमनें थीं,
हो चुकीं बेलौस, पलकें भी कहां झपका रही हैं।
शादमां है दिल, नजर की बेकरारी रंग पर है,
मस्तियां रुख्सारों पे, कुछ सिलवटें बिखरा रही हैं।
कंपकंपी में गर्म चादर, की तरह उनको लपेटे,
जो गुजारी हैं कभी, रातें वही तड़पा रही हैं।
जेठ की दोपहरियों में, जल रही वीरानियां ये,
चिलचिलाती धूप में, उनको पुकारे जा रही हैं।
भीगते सावन में फिर, ज़ीनी फुहारें लौट आईं,
अश्क पलकों में लिए, परछाइयां टकरा रही हैं।
झूमती रिमझिम घटाएं, तिश्नगी में चूर होकर,
ये ख्वाएं सरसराती, मस्त हो बल खा रही हैं।
चुप मनाजिर थे मगर, फिर झील से हलचल उठी वो,
कुछ हिलोरें नाव में, तन्हाईयां भी ला रही हैं।
मुंतजिर बैठी 'सुधा', है सब्र का दामन संभाले,
जिंदगी कम पड़ न जाए, फिक्रें ये घबरा रही हैं।

{ स्मरण / अरविंद कुमार }

सभी करते थे बाबू जी का सम्मान

हिंदी के प्रख्यात कथाकार अमरकांत जी का यह जन्मशती वर्ष है। उनकी कहानियों और उपन्यासों से तो अधिकांश साहित्यप्रेमी परिचित हैं ही, पर उनके व्यक्तित्व और स्वभाव में उपस्थित सदाशयता, विनम्रता के बारे में लोग कम ही जानते हैं। उनके सुपुत्र अरविंद कुमार ने अपने पिता से जुड़ी कुछ भावभीनी स्मृतियां **हरिभूमि** से साझा कीं। दुर्भाग्य से कुछ माह पूर्व अरविंद जी का निधन हो गया।

बाबू जी (अमरकांत जी) सपरिवार लखनऊ से जब करेलाबाग कॉलोनी (इलाहाबाद अब प्रयागराज) में आकर रहने लगे तो वहां एक अलग माहौल देखने को मिला। इस कॉलोनी में पांच सौ चार क्वार्टर्स हुआ करते थे, जिसमें हिंदू, मुसलमान, सिख और ईसाई सभी रहा करते। वहां बहुत ही सुखद सामाजिक रिश्तों का ताना-बाना, सौहार्दपूर्ण वातावरण देखने को मिला। हर तरफ हरियाली एवं सांस्कृतिक परिवेश का माहौल था। हमारे क्वार्टर के ठीक सामने एक बड़ा अमलतास का पेड़ था। गर्मियों में इसके फूल खिलते तो ऐसा महसूस होता था, जैसे पेड़ पीले गहनों से सजा हुआ है, एक बार नामवर सिंह जी दो-चार लोगों के साथ आए तो इस स्थान ने उन्हें अभिभूत कर दिया, वे बोले, 'अमरकांत जी हम लोग इसी मनोरम जगह पर बैठेंगे। सुबह का समय, यहां की अनुभूति कैसी होती है, महसूस किया जाए।' दरअसल, पेड़ों पर तरह-तरह के पक्षियों का आवागमन, उनका कलरव मोहक लगता। इसीलिए आने वाले लोगों को यह स्थान मनोरम लगता।

कॉलोनी के बाहर की एक सड़क (नूर उल्लाह रोड, जो स्टेशन से सीधी करेली गांव तक जाती) पर मिस्टर रफी अहमद नाम के व्यक्ति का प्रेस एवं पेपर कटिंग मशीन लगी थी। इस स्थान पर रोजाना दो खेल शतरंज एवं कैरम सायं सात बजे से रात्रि बारह बजे तक नियम से खेला जाता। रफी साहब का बाबू जी से बहुत अच्छा संबंध था। बाबू जी को भी उक्त दोनों खेल पसंद थे। शनिवार के दिन अकसर वहां उनका इंतजार रहता। बगल के मोहल्ला रसूलपुर से भी शतरंज और कैरम में रुचि रखने वाले कुछ लोग आते, जिसमें दो नाम खासतौर पर मुझे याद हैं एक बहार आलम, जो पेशे से वकील, साहित्य कला में भी दिलचस्पी रखते थे। और उनके छोटे भाई नन्हे पहलवान भी उनके साथ आया करते थे। एक रोज की बात है, मां ने मुझसे कहा, 'रात अधिक हो गई है। रफी अहमद के यहां जाकर देखो बाबू जी अभी आए क्यों नहीं?' मैं कुछ ही समय पश्चात वहां पहुंच गया। खेल में बड़ी खामोशी थी। शतरंज की अंतिम बाजी पर लोगों की निगाहें गड़ी हुई थीं। कई शोहरतमंद गणमान्य व्यक्तियों की मौजूदगी में खेल हो रहा था। उर्दू अनुवादक हुनर साहब, स्थानीय विधायक हबीब अहमद आपस में बाजी लगा बैठे थे। बाबू जी की दूसरी तरफ खिलाड़ी बहार आलम थे। पंद्रह मिनट का समय लगा, बाजी बाबू जी ने अपने पक्ष में कर ली। सभी बाबू जी को बधाई देने लगे। पर वे बहार आलम के खेल की सराहना करते जा रहे थे, 'बहुत अच्छा खेला आपने।' बाबूजी का स्वभाव ऐसा ही था, उनमें दंभ जरा भी नहीं था।

बाबूजी से जुड़ी एक और स्मृति याद आ रही है। अक्टूबर 1987 का दिन, वे गंभीर रूप से बीमार पड़े। वे मेटाबॉलिक बोन डिजीज से ग्रसित हो गए। उन्हें स्पाइनल कॉर्ड में इंफेक्शन हो गया था। प्रारंभ में कई डॉक्टरों से संपर्क किया गया, डॉक्टरों ने जॉगिंग और एक्सरसाइज करने की सलाह दी। उन्हें पेनकिलर के सहारे मुक्त कर दिया गया। समस्या यह हो गई कि उन्हें कोई भी खान-पान की चीज अच्छी नहीं लग रही थी और उनके बैक बोन में असहनीय दर्द था। मेडिकल कॉलेज के हड्डी के एक्सपर्ट डॉक्टरों ने कहा,'घबराने की बात नहीं है उम्र का तकाजा है।' जबकि ऐसी भी उम्र नहीं थी कि उस पर दोष मढ़ा जाए। बहरहाल, वे घर आ गए। मगर समस्या जस की तस बनी रही।

वे उन दिनों महिलाओं की पत्रिका 'मनोरमा' का संपादन कर रहे थे, किंतु स्वास्थ्य की वजह से असमर्थ हो गए थे। इसकी जानकारी डॉ. शांति चौधरी जी को हुई तो वे भागे-भागे घर पर आईं और पूरी जानकारी ली। उन्होंने अगले दिन इलाहाबाद मेडिकल कॉलेज में वीआईपी वार्ड बुक करवाया। सभी चेकअप हुए। जानकारी मिली कि बाबू जी का हीमोग्लोबिन चार प्रतिशत पर आ गया है, जोकि बहुत ही चिंताजनक था। नामी विशेषज्ञ डॉक्टर ने देखा। बाबू जी दो दिन अस्पताल में रहकर वापस घर आ गए। शांति चौधरी जी, बाबू जी को पिता तुल्य मानती थीं। हम लोगों का उनसे बहुत आत्मीय रिश्ता रहा है। वह 'मनोरमा' से विशेष कार्याधिकारी के रूप में जुड़ी थीं और इलाहाबाद मेडिकल कॉलेज में पीआरओ के पद पर थीं।

कुछ दिनों तक जब बाबू जी की सेहत में कोई सुधार नहीं हुआ तो चिंता हुई। तभी उन्हें देखने के लिए एस. के. दुबे आए जो टाइम्स ऑफ इंडिया के ब्यूरो चीफ थे। उन्होंने बताया डॉ. आर. सी. गुप्ता ऑस्ट्रेलिया से आ गए हैं, एक बार उन्हें बाबू जी को दिखाया जाएगा। उस समय रात्रि के आठ बजे हुए थे। लेकिन मुझे दूसरे दिन पर न टालकर रात्रि में ही ले जाना उचित लगा।

क्लीनिक बंद होने का समय रात्रि नौ बजे तक था। हम लोग पौने नौ बजे अस्पताल पहुंच गए। काउंटर बंद हो रहा था। डॉक्टर के असिस्टेंट डॉ. ए. के. सिंह ने बताया कि आप फीस जल्दी जमा कर दें, डॉ. साहब उठने वाले हैं। तभी डॉ. आर. सी. गुप्ता हम लोगों के समीप आए। उनकी पोशाक, पैर में खड़ाऊ और खद्दर का कुर्ता-पाजामा। पूछा, 'इन्हें क्या हो गया?' मैंने सभी बातें बताईं। उन्होंने असिस्टेंट डॉ. सिंह से कहा कि उस जगह का एक्स-रे करें जहां दर्द है। मैंने बताया प्रेस में जॉब करते हैं। फिर उनका सवाल था खड़े होकर काम करते हैं या बैठकर? मैंने कहा, 'बैठकर ही करते हैं।'

डॉक्टर गुप्ता ने पूछा, 'प्रेस कहां पर है?' जब मैंने प्रेस का नाम बताया, तो बोले, 'अरे यह प्रेस तो बहुत बड़ा है। यहां से तो पांच-छह मशहूर पत्रिकाएं निकलती हैं माया, मनोरमा, सत्यकथा, मनोहर कहानियां, प्रोब इंडिया। मनोरमा के संपादक तुम्हारे पिता के नाम वाले ही हैं, उनका नाम अमरकांत है, मगर वह बड़े राइटर हैं।'

मैंने जब उनसे कहा कि वे यही हैं। इस पर पहले तो डॉक्टर साहब मुझे कुछ सेकेंड एकटक देखते रहे फिर उठकर एक्स-रे रूम में गए। कुछ सेकेंड में डॉक्टर ए. के. सिंह जी बाहर आए और रसीद काउंटर रूम में गए। मेरे जमा किए गए पैसे लाकर विनम्रतापूर्वक मुझे दे दिए। बोले, 'डॉक्टर साहब ने पैसे वापस करने के लिए कहा है।' डॉक्टर आर. सी. गुप्ता पंद्रह-बीस मिनट में अपने चैंबर में वापस आ गए, बोले, 'जो मुझे शक था वही निकला।' उन्होंने अपने क्लीनिक से पूरे एक माह की दवा मुझे दी। मैं पैसे निकालने लगा, तो मना कर दिया, फिर बोले 'इनका पूरा इलाज मैं करूंगा। आपको कोई तनाव नहीं लेना है। मैं आपके साथ हूं। मुझे अमरकांत जी की सेवा करने का मौका मिला, मेरा सौभाग्य है। मैं कमिश्नर, मंत्री के घर नहीं जाता हूं, लेकिन मैं आपके घर नियमित आकर इनको देखूंगा। अस्पताल आने की जरूरत नहीं है, घर पर ही सभी इंतजाम करवा दूंगा।' उन्होंने सच में ऐसा ही किया। घर पर ही बाबू जी को ट्रैक्शन लगवाया, साथ ही कमर से लेकर छाती तक प्लास्टर भी करवाया। छह माह तक वे बाबू जी को देखने घर नियमित आते रहे, न कभी फीस लिया और दवा, इंजेक्शन के खर्च से भी मुक्त रखा। बाबू जी छह माह ट्रैक्शन, प्लास्टर और दवा पर रहे, सीधे लेटे रहते। मर्ज जरूर दूर हो गया किंतु स्पाइनल कॉर्ड डिफार्म हो गया। बाबू जी को कष्ट तो बहुत रहा लेकिन डॉक्टर आर. सी. गुप्ता जैसे लोगों का उनके प्रति आदर और प्रेम देखकर मैं अभिभूत हो जाता था। बाबू जी इतने बड़े लेखक-संपादक थे लेकिन उनका व्यक्तित्व इतना सरल रहता कि हर कोई उनका सम्मान करता था। *

सैर-सपाटा
अंशु सिंह

भारत के उत्तरपूर्व में छोटा सा प्रदेश है- सिक्किम। इसका एक तिहाई हिस्सा बायोस्फीयर रिजर्व और यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट है, जहां दुनिया की तीसरी सबसे ऊंची चोटी, माउंट कंचनजंगा स्थित है। यहां की संस्कृति मिली-जुली है। खाना अनोखा है, नजारे शानदार, सड़कें साफ-सुथरी और माहौल बहुत शांत है। कुछ समय पूर्व ही सिक्किम की यात्रा से लौटीं लेखिका इसकी खूबसूरती बयां कर रही हैं अपनी जुबानी।

जन्नत से कम नहीं सिक्किम

हालांकि देश के अलग-अलग हिस्से में यात्राएं तो मैंने कई की हैं। लेकिन अब तक देश के उत्तरी पूर्वी राज्यों में से कहीं जाना नहीं हुआ था। इसलिए जिस दिन सिक्किम यात्रा का प्लान फाइनल हुआ, उस दिन से मन में एक अलग-सा उल्लास भर गया था। दिल्ली से सिक्किम जाने के दो विकल्प थे- ट्रेन या हवाई जहाज। हमारे समूह ने ट्रेन से जाने का निर्णय लिया। दिल्ली से पहले पश्चिम बंगाल के नई जलपाईगुड़ी और फिर वहां से प्राइवेट कैब लेकर गंगटोक। यह यात्रा काफी दिलचस्प रही। पहाड़, जंगल, संग-संग बहती तीस्ता नदी और छोटे-छोटे गांव, कस्बों को पार करते हुए आखिरकार हम गंगटोक पहुंचे।

गंगटोक ने मोह लिया मन

हिमालय की गोद में बसा गंगटोक एक ऐसा स्थान है, जहां बादल पहाड़ों के साथ अठखेलियां करते हैं, तो नदियां अपनी ही धुन में गीत गाती बहती हैं। यह नजारा किसी जन्नत से कम नहीं लगता। जैसे ही सूरज की किरणें बर्फ से ढंकी चोटियों को चूमती हैं, नीचे हरी-भरी घाटियों पर सुनहरी आभा बिखर जाती है। अपने रंग-बिरंगे बौद्ध मठों, बाजारों और मोहक नजारों से सजा गंगटोक बेमिसाल है। सिक्किम की यह राजधानी दुनिया के कुछ सबसे शानदार बौद्ध मठों का घर है, जिसमें सबसे मशहूर मठ है रुमटेक मठ। गंगटोक से करीब 21 किमी दूर स्थित इस मठ के शांत माहौल में आप रम जाएंगे। इसके अलावा, बीच शहर में स्थित गोनजैंग मठ भी कम मनमोहक नहीं है। शहर के अन्य आकर्षणों में बानझाकरी वॉटरफॉल, ताशी व्यू प्वाइंट, गणेश टोक, हनुमान टोक, गैंगटोक रोप-वे राइड, हिमालयन जूलॉजिकल पार्क और ऑर्किडेरियम मुख्य हैं।

टेमी टी गार्डन से कंचनगंजा के दीदार

गंगटोक पहुंचने के दूसरे दिन, सुबह नाश्ता करके हम सभी पश्चिम सिक्किम के पेल्लिंग के लिए रवाना हुए, जो करीब 130 किमी. दूर था। हमारा पहला पड़ाव टेमी चाय बागान था। यह सिक्किम का एकमात्र टी गार्डन है, जहां ऑर्गेनिक चाय की पैदावार होती है। घुमावदार रास्तों से जब हमने इस गार्डन में प्रवेश किया, तो वहां की खूबसूरत छटा देखते ही रह गए। मौसम साफ था, तो वहां से कंचनजंगा चोटी के दीदार भी हुए। कुछ समय बिताने के पश्चात हम आगे बढ़े। शाम करीब 4.15 बजे हम पेल्लिंग स्थित अपने होम स्टे पर पहुंच गए। वहां सभी का स्थानीय रीति-रिवाज के अनुसार, स्वागत हुआ। लेकिन तब तक मौसम का रंग बदल चुका था। रिमझिम शुरू हो गई। अगली सुबह भी बारिश थमी नहीं। लेकिन नौ बजते-बजते आसमान साफ होने लगा। हम निकल पड़े पेल्लिंग की ओर।

पश्चिमी सिक्किम का नगीना-पेल्लिंग

पेल्लिंग एक शांत कस्बा है, जो करीब 7,050 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यह प्रकृति प्रेमियों के लिए किसी स्वर्ग सरीखा है। हरी-भरी घाटियों, झर-झर गिरते झरनों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के साथ यह इलाका सिक्किम के मूल स्वरूप को बेहद खूबसूरती से समेटे हुए है। यहां अकसर कोहरा और बादल छाए रहते हैं, जो इसकी अलौकिक सुंदरता को और भी बढ़ा देते हैं। यहां ट्रैकिंग, माउंटेन बाइकिंग, बर्ड वॉचिंग करने के अलावा, प्राचीन मठ, गोंपा और स्तूपों से लेकर यूनेस्को द्वारा घोषित विश्व धरोहर कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान एवं पवित्र खेचेओपालरी झील की सैर कर सकते हैं। हमने कुछ चुनिंदा स्थानों पर जाना तय किया।

पेमायंगत्से मठः 17वीं सदी में स्थापित, सिक्किम के सबसे पुराने मठों में से एक पेमायंगत्से मठ में दुर्लभ कलाकृतियां देखने को मिलेंगे।

खेचेओपालरी झीलः बौद्ध और हिंदू धर्म में पूज्यनीय माने जाने वाले पवित्र खेचेओपालरी झील में एक अलग ही अनुभव होता है। मान्यता है कि मनोकामना पूर्ति करने वाली इस झील के शांत जल को गुरु पद्मसिन और देवी तारा का आशीर्वाद प्राप्त है।

सिडकियोंग बर्ड पार्कः पक्षी प्रेमियों के लिए पेल्लिंग और रबदंत्से के बीच एक खास आकर्षण का स्थल है- सिडकियोंग बर्ड पार्क, जो हिमालयी क्षेत्र में पाए जाने वाले देशी-विदेशी पक्षियों का घर है।

रिवर ऑरेंज गार्डनः रिंबी नदी के किनारे स्थित इस गार्डन में संतरे के बेशुमार पेड़ लगे हैं। ऑरेंज गार्डन के अंदर एक विलेज होमस्टे, कुछ दुकानें और रेस्टोरेंट भी हैं।

ग्लास स्काईवॉकः ग्लास स्काईवॉक पेल्लिंग के बेहद शानदार अनुभवों में से एक है। देश के इस पहले 'ग्लास स्काईवॉक' के अनुभव को भुलाया नहीं जा सकता, जो समुद्रतल से लगभग 7200 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। जब आप इसके पारदर्शी शीशे के फर्श पर कदम रखते हैं, तो हवा में चलने जैसा एहसास होता है। नीचे घाटी को देखते हुए रोमांचक अनुभव होने के साथ-साथ थोड़ी घबराहट भी होती है। लेकिन आस-पास के हरे-भरे नजारे और पूर्वी हिमालय के शानदार दृश्य मन को सुकून देते हैं। स्काईवॉक के समीप ही चार भुजाओं वाले चेनरेजिंग (अवलोकितेश्वर) की 137 फीट ऊंची मूर्ति भी स्थित है।

नामची में चार धाम के दिव्य दर्शन

पेल्लिंग में दो दिन बिताने के उपरांत हमारा अगला डेस्टिनेशन था, सिक्किम के दक्षिण में स्थित नामची। इसे राज्य का सांस्कृतिक और धार्मिक केंद्र कहते हैं। यहां हमने 'चार धाम' मंदिर के दर्शन किए। असल में यहां भारत के चार पवित्र मंदिरों- बद्रीनाथ, जगन्नाथ, द्वारका और रामेश्वरम की प्रतिकृतियां बनाई गई हैं। मंदिर परिसर में भगवान शिव की 108 फुट ऊंची प्रतिमा मुख्य आकर्षण का केंद्र है। समीप में एक भव्य साईं मंदिर भी है।

रावंगला का अलौकिक बुद्ध पार्क

नामची से जब हम रावंगला की ओर बढ़े, तो वहां हमें एक भव्य बुद्ध पार्क के दर्शन हुए, जिसे 'तथागत त्सल' के नाम से भी जाना जाता है। यहां शाक्यमुनि बुद्ध की 130 फुट ऊंची, अत्यंत सुंदर प्रतिमा स्थित है।

मनमोहक त्सोंगो झील

गंगटोक से लगभग 40 किलोमीटर दूर (गंगटोक-नाथुला हाइवे), 12,313 फीट की ऊंचाई पर स्थित त्सोंगो झील एक हिमनद झील है, जो अपने शानदार प्राकृतिक नजारों और गहरे सांस्कृतिक महत्व के लिए जानी जाती है। इसकी सतह

का रंग मौसम के अनुसार, बदलता रहता है। जैसे ही हम इसके करीब पहुंचे, वहां का नजारा कल्पना से भी परे था। चारों ओर बर्फ से ढंकी चोटियां और हरे-भरे घास के मैदान। यह किसी परी कथा से सीधे निकला हुआ दृश्य लग रहा था। हमने यहां न सिर्फ बर्फ में मस्ती, याक की सवारी की, बल्कि दुनिया के सबसे ऊंचे रोप-वे की रोमांचक यात्रा भी की।

लाचुंग की यादगार यात्रा

हमारा अगला पड़ाव अब सिक्किम का उत्तरी भाग था, जो क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा और अधिक रिमोट क्षेत्र है। गंगटोक से लाचुंग की दूरी करीब 102 किमी. है। सबसे पहले हमें मिला, सेवन सिस्टर्स वॉटरफॉल्स। इस झरने में सात सीढ़ियां या चरण हैं, इसलिए इसका यह नाम पड़ा। यहां कुछ देर ठहरने के पश्चात हम आगे बढ़े, तो अगला पड़ाव लाचुंग में प्रवेश का चेक प्वाइंट था। लाचुंग में हमने रात में होटल में विश्राम किया और अगले दिन सुबह-सुबह युमथांग घाटी और जीरो प्वाइंट के लिए निकले।

परीलोक जैसा युमथांग घाटी

11,800 फीट से ज्यादा की ऊंचाई पर बसा युमथांग घाटी किसी परीलोक जैसा लगा। अल्पाइन घास के सुंदर मैदान, चारों ओर बर्फ से ढंकी चोटियां, गर्म पानी के झरने और साथ में बहती लाचुंग नदी। इसे फूलों की घाटी भी कहते हैं। यहां खासकर रोडोडेंड्रोन के फूल खिलते हैं, जो वैली को गुलाबी, लाल और बैंगनी रंगों से रंग देते हैं।

धरती का वंडरलैंड जीरो प्वाइंट

युमथांग घाटी के सर्पीले रास्तों से गुजरते हुए हमारा साक्षात्कार धरती पर एक अलग ही दुनिया से होता है, जिसे 'जीरो प्वाइंट' (या युमेसमडोंग) कहते हैं। उत्तरी सिक्किम में 15,300 फीट की ऊंचाई पर भारत-चीन सीमा के पास स्थित यह एक सफेद वंडरलैंड है। यहां ऑक्सीजन की मात्रा कम होती है, तो आपको नीचे से ही पोर्टेबल ऑक्सीजन कैन लेकर आना होता है। जीरो प्वाइंट पर सिर्फ भारतीय सैलानी ही आ सकते हैं। उन्हें सिक्किम टूरिज्म डिपार्टमेंट से प्रोटेक्टेड एरिया परमिट की जरूरत पड़ती है, जो रजिस्टर्ड टूर ऑपरेटर के जरिए एडवांस में लेना होता है। *

कब जाएं : सिक्किम जाने का बेस्ट टाइम है मार्च से मई का महीना। इसके अलावा अक्टूबर से दिसंबर के मध्य तक यहां जा सकते हैं। यूं कहें कि मानसून से पहले यहां कभी भी जा सकते हैं।

कैसे जाएं : आमतौर पर सैलानी पश्चिम बंगाल के बागडोगरा तक हवाई यात्रा करते हैं और वहां से कैब के जरिए गंगटोक जाते हैं। आगे की यात्रा भी सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त टूर ऑपरेटर के कैब या टैक्सी से करते हैं। बागडोगरा के अलावा, गंगटोक से 35 किमी दूर स्पेशल पाकयोंग एयरपोर्ट भी है। ट्रेन से आप सिलिगुड़ी या न्यू जलपाईगुड़ी तक पहुंच सकते हैं और वहां से कैब से गंगटोक जा सकते हैं।

परफ्यूम-डिओड्रेंट से मिले फ्रेश फील

सीजनल ट्रेंड / विवेक कुमार

गर्मी के मौसम में युवाओं की लाइफस्टाइल में कई तरह के बदलाव देखने को मिलते हैं। उनके ड्रेस कलर हल्के हो जाते हैं। फुटवियर कंफर्टेबल और पसीना सोखने वाले पहनने लगते हैं। स्किन केयर प्रोडक्ट्स की संख्या बढ़ जाती है और इन सब चीजों के साथ ही शामिल हो जाता है डिओड्रेंट और परफ्यूम।

बढ़ा है ट्रेंडः एक जमाना था, जब केवल खास मौकों पर ही परफ्यूम, डिओड्रेंट आदि का इस्तेमाल किया जाता था। लेकिन आज के युवाओं की डेली लाइफस्टाइल के लिए ये जरूरी चीजें बन गई हैं, क्योंकि अब खुशबू केवल सौंदर्य का विषय नहीं बल्कि आत्मविश्वास और व्यक्तित्व का भी हिस्सा है। इसलिए कॉलेज से लेकर सोशल गेदरिंग और दफ्तर तक में परफ्यूम, डिओड्रेंट का चलन बहुत बढ़ गया है।

गर्मियों में इसलिए भी है जरूरीः गर्मियों में शरीर से पसीना बहुत निकलता है। इस कारण शरीर में बैक्टीरिया तेजी से सक्रिय होते हैं और शरीर से दुर्गंध आने लगती है। यंगस्टर्स सबसे ज्यादा भागदौड़ करते हैं और बहुत सारे लोगों से मिलते-जुलते हैं। ऐसे में शरीर से अच्छी खुशबू आना और फ्रेश फील करना, जरूरी हो जाता है। यही वजह है कि गर्मी के मौसम में डिओड्रेंट और परफ्यूम युवाओं के लिए सबसे जरूरी एसेसरीज बन जाती हैं।

बदल रही है च्वॉइसः फ्रेगरेंस की बात करें तो पहले के जमाने में लोग सिट्रस, एक्वा, मिंट, फ्लोरल नोट्स वाले परफ्यूम इस्तेमाल किया करते थे। जबकि लड़कियां बॉडी मिस्ट और हल्के फ्रूटी परफ्यूम पसंद करती थीं। लेकिन आजकल

स्पोर्टी और मस्क फ्रेगरेंस का चलन बढ़ा है।

बढ़ी है डिमांड-सप्लाईः कुछ दशक पहले के युवाओं के मुकाबले आज के युवाओं की अर्निंग और परचेजिंग पावर बढ़ी है। जो टीनएजर अपने मम्मी-पापा पर पॉकेटमनी के लिए डिपेंड हैं, उनकी पॉकेटमनी भी पहले से काफी ज्यादा बढ़ गई है। इस कारण भी बाजार में परफ्यूम और डिओड्रेंट जैसी एसेसरीज की भरमार हो गई है। अब केवल बड़े ब्रांड ही नहीं बल्कि कई भारतीय स्टार्टअप भी युवाओं को ध्यान में रखकर नए-नए प्रोडक्ट्स लांच कर रहे हैं। मसलन, पॉकेट परफ्यूम, मिनी रोल-ऑन, एल्कोहल फ्री डिओड्रेंट आदि तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। *

सिने ट्रेंड
डी. जे. नंदन

फिल्मों में कितना इफेक्टिव है स्पीड-एडवेंचर का जादू

आज की दौड़ती-भागती जिंदगी जी रहे लोग, खासकर यंगस्टर्स, मनोरंजन के लिए देखी जाने वाली फिल्मों में भी 'स्पीड' यानी तेजी से भागती कहानी पसंद करते हैं। हालांकि कई फिल्में इसकी अपवाद भी रही हैं। फिल्मों में स्पीड और एडवेंचर के सक्सेस से रिलेशन पर एक नजर।

आज का दर्शक ठहराव नहीं, स्पीड चाहता है।' यह धारणा इन दिनों फिल्म जगत में किसी सूत्रवाक्य की तरह हर तरफ गूंज रही है। कहा जा रहा है कि मोबाइल स्क्रीन, रील कल्चर और लगातार बदलती डिजिटल दुनिया ने युवाओं को इतना धैर्यहीन बना दिया है कि अब वह उन्हीं फिल्मों को देख सकते हैं या देखते हैं, जो शुरुआती 10 मिनटों में ही दर्शकों को खुद से जोड़ ले। हर कुछ देर में चौकाएं और कहानी में बिना कोई ठहराव आए, वह लगातार आगे बढ़ती रहे। इसके लिए फिल्मों में तेज एडिटिंग, छोटे दृश्य, लगातार ट्विस्ट और ऊंची भावनात्मक उत्तेजना का चलन बढ़ा है। कुल मिलाकर यह 'हाई इंगेजिंग' ड्रामा का दौर है।

दर्शकों को चाहिए अटैचमेंट हुकः इसमें कोई दो राय नहीं है कि आज का युवा दर्शक शुरू से ही फिल्मों में 'अटैचमेंट हुक' चाहता है। उसमें यह आदत हाल के सालों में विकसित हुई रील कल्चर और विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्म ने ही लगाई है, क्योंकि आज के युवा आमतौर पर दिन के तीन से चार घंटे, छोटे वीडियो और तेज रफ्तार सूचनाओं के घेरे में रहते हैं। लगातार बदलती विजुअल एक्साइटमेंट के बीच रहने के कारण उनके स्वभाव में तेजी को लेकर पसंदगी बढ़ी है। बॉलीवुड फिल्म इंडस्ट्री में भी कुछ इस तरह से हाइप बन गई है कि अगर कहानी देर तक एक ही वातावरण में टिकी रही तो दर्शकों, विशेषकर युवाओं का ध्यान उचट जाएगा और वो फिल्म को नकारा देंगे।

इन फिल्मों ने सेट किया नया ट्रेंडः अब बॉलीवुड ट्रेंड के जानकारों और फिल्म मेकर्स के लिए सफलता का अलिखित सिद्धांत बन चुका है कि युवा दर्शकों को फिल्मों में शुरू से ही बांधकर रखो। किसी बड़े हादसे के जरिए, किसी उलझाऊ रहस्य के जरिए या अंधाधुंध हिंसा अथवा विस्फोट के जरिए। बहरहाल, यह राय बनाने या यूं कहें कि यह ट्रेंड सेट करने में हाल के वर्षों में आई 'जवान' और 'एनिमल' जैसी फिल्मों की बड़ी भूमिका है। क्योंकि इन फिल्मों में तेज रफ्तारी का सिद्धांत ही सबसे ज्यादा मजबूती से खड़ा दिखाई देता है। इन फिल्मों की सफलता और फिर हाल में आई 'धुरंधर-1', 'धुरंधर-2', की सफलता ने ही तेज रफ्तार वाली फिल्मों के लिए माहौल बनाया है। ट्विस्ट और टर्न्स से भरी इन इन सभी फिल्मों में बड़ी तेजी से थोड़ी-थोड़ी देर में दृश्य बदलते हैं।

इमोशनल इंगेजिंग फिल्में भी हुईं सफलः फिल्मों की स्पीड को लेकर सवाल यह भी उठता है कि क्या सचमुच आज का युवा दर्शक सिर्फ तेज रफ्तार फिल्मों का दीवाना है? अगर ऐसा ही होता तो भला '12वीं फेल' और 'लापता लेडीज' जैसी धीमी रफ्तार वाली फिल्मों को युवाओं ने इतना क्यों पसंद किया? दरअसल, बहस सिर्फ स्पीड की नहीं इंगेजमेंट की है। आज का युवा दर्शक वाकई कहानी में अनावश्यक खिंचाव नहीं चाहता, लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं है कि वह भावनात्मक गहराई को समझता नहीं या उसे पसंद नहीं करता। जब भी ऐसी फिल्में आती हैं, जिनमें भावनात्मक गहराई मौजूद होती है, तो फिर वह उन्हें निश्चित रूप से पसंद करता है। '12वीं फेल' और 'लापता लेडीज' जैसी फिल्मों का कथानक भी महानगरों से दूर ग्रामीण परिवेश का था, फिर भी ये दोनों फिल्में खासकर युवा दर्शकों द्वारा खूब पसंद की गईं, तो इसका मतलब यह है कि युवा दर्शक सिर्फ तेज स्पीड और हाई इंगेजिंग फिल्मों को ही पसंद नहीं करते बल्कि उन सभी फिल्मों को पसंद करता है, जो उनकी भावनाओं को स्पर्श करती हैं। आज के युवा दर्शक अच्छी कहानी पसंद करते हैं, चाहे वह तेज हो या फिर चाहे धीमी ही क्यों न हो।

पुरानी फिल्मों में नहीं था स्पीड का प्रेशरः पुराने जमाने की फिल्मों के पात्र आपस में देर तक बातचीत करते थे। खामोशी होती थी, तो वह भी कई बार इतनी लंबी होती थी कि दर्शक खुद खामोशी महसूस करने लगता था। इस तरह अगर इस स्पीड के पैमाने पर पुरानी फिल्मों को कसें तो कोई फिल्म ही नहीं हिट होनी चाहिए थी। लेकिन हम जानते हैं कि फिल्मों की सफलता की दर आज के मुकाबले पहले कहीं ज्यादा थी। यह अलग बात है कि आज के मुकाबले फिल्मों की कमाई बहुत कम थी। वास्तव में पेस (स्पीड) इन दिनों सच्चाई से कहीं ज्यादा एक फैशन की तरह इस्तेमाल किया जा रहा है, जबकि सच यह है कि आज के दर्शक भी गहरे और इंटेंस कम रफ्तार के दृश्य भी खूब पसंद करते हैं।

स्पीड के अलावा भी हैं कई फैक्टर्सः आज का युवा दर्शक सिर्फ धीमेपन से बोर नहीं होता बल्कि बेसिर पैर के फिल्म के खिंचाव, बिना किसी वजह फिल्म को वल्गर बनाने की कोशिश और जबर्दस्ती फिल्मों में ठूंस दिए गए आइटम सॉन्ग जैसे एक्सपेरिमेंट्स से चिढ़ता है। उसे ऐसी फिल्में वाकई ज्यादा पसंद नहीं आतीं, जिनमें जानबूझकर लॉजिक की ऐसी-तैसी की गई हो। आज का दर्शक फिल्म के हर फ्रेम में चाहे वह जिस तरह की भावना का हो, इसमें हाई इंटेंसिटी की तलाश करता है। कुल मिलाकर कहने का मतलब यह है कि सवाल रफ्तार का नहीं, निरंतरता का है। अगर फिल्में दर्शक को लगातार मानसिक और भावनात्मक तरीके से जोड़े रखती हैं, तो वह धीमी होकर भी प्रभावशाली हो सकती हैं, यह कोई ब्रह्म वाक्य नहीं है कि आज का दर्शक स्पीड और हाई इंगेजिंग ट्विस्ट वाली फिल्में ही देखना चाहते हैं। वे केवल एंटरटेनमेंट चाहते हैं। *

रोचक
शिखर चंद जैन

इन दिनों फ्रूट मार्केट में तरह-तरह के आम खूब मिल रहे हैं। इनका स्वाद तो लाजवाब होता ही है, इनसे जुड़े अतीत के कुछ किस्से भी बड़े दिलचस्प हैं।

आम से जुड़े ये किस्से हैं बेहद खास

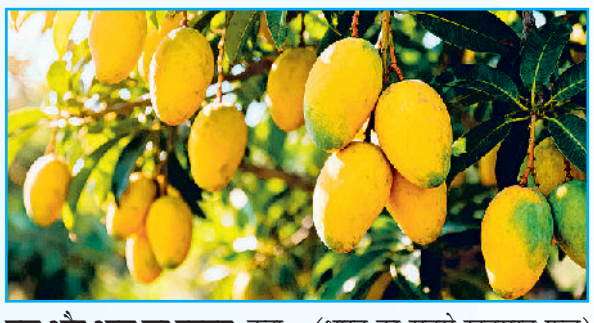

भारत में आम केवल एक फल नहीं, बल्कि संस्कृति, साहित्य इतिहास और राजनीति का एक अहम हिस्सा रहा है। सम्राटों से लेकर राजनेताओं और साहित्यकारों तक, आम की मिठास ने कई किस्सों को जन्म दिया है। हिंदी साहित्य में 'आम' न केवल फलों का राजा होने के कारण प्रसिद्ध है, बल्कि यह वसंत ऋतु, प्रेम, मादकता और कामदेव के प्रतीकों के रूप में भी बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्राचीन संस्कृत साहित्य से लेकर आधुनिक हिंदी कविता और निबंधों तक, आम का बौर, उसकी खुशबू और मिठास कवियों और लेखकों की कल्पना का अभिन्न हिस्सा रही है। आम से जुड़े कुछ रोचक किस्से हैं, जो आज भी रस ले-लेकर सुने-सुनाए जाते हैं।

आम्रपाली और आम्रपाली आम का रिश्ताः बिहार की प्रसिद्ध नृत्यांगना और वैशाली की गणिका आम्रपाली, आम के पेड़ के नीचे शिशु रूप में मिली थी, इसलिए उसका नाम 'आम्रपाली' (आम के पत्ते) रखा गया। आम की एक लोकप्रिय किस्म 'आम्रपाली' का नामकरण उसी के नाम पर किया गया है।

बुद्ध और आम का उपवनः कहा जाता है कि आम्रपाली ने भगवान बुद्ध को अपने आम के बाग (आम्रवन) में आमंत्रित किया था और उन्हें वह बाग दान कर दिया था। आम्रपाली बाद में महात्मा बुद्ध की शिष्या बन गईं।

अमीर खुसरो का आम पर शेरः 13वीं सदी के महान कवि अमीर खुसरो ने फारसी में आम की प्रशंसा में कविताएं लिखी थीं। खुसरो ने आम को 'नगजा तरीन मेवाह हिंद' (भारत का सबसे खूबसूरत फल) कहा था।

अलाउद्दीन खिलजी की शाही दावत में आमः दिल्ली के सुल्तान रहे अलाउद्दीन खिलजी आम के दीवाने थे। कहा जाता है कि उन्होंने दिल्ली के 'कुश-ए-फिरोजी' में आम की कई किस्मों की एक शानदार दावत दी थी, जिसमें उन्होंने आम के साथ संगीत का शानदार कार्यक्रम आयोजित करवाया था।

आम का दीवाना बाबरः मुगल वंश के संस्थापक बाबर को आम इतना पसंद था कि उसने अपनी आत्मकथा 'तुजुक-ए-बाबरी' में आम का जिक्र किया है। कहा जाता है कि वह भारत में आम का स्वाद चखकर चकित रह गया था, क्योंकि यह फल मध्य एशिया के देशों में नहीं मिलता था।

अकबर का आम प्रेम और लाख बागः मुगल बादशाह अकबर आम का इतना शौकीन था कि उसने बिहार के दरभंगा में 1 लाख से अधिक आम के पेड़ों का बाग लगवाया था, जिसे 'लाखी बाग' कहा जाता था। उसने आम की कई उन्नत किस्मों को भी विकसित करने में सहायता दी थी।

मिर्जा गालिब की आम-दीवानगीः मशहूर शायर मिर्जा गालिब आम के बड़े दीवाने थे। वे कहते थे कि 'आम में बस दो ही खूबियां होनी चाहिए-वे मीठे हों और बहुत सारे हों।' एक किस्से के अनुसार, जब उनके दोस्त ने आम को नापसंद किया, तो गालिब ने नाराज होकर कहा था, 'गधे भी आम नहीं खाते।' *

भारत में हुई आम की उत्पत्तिः माना जाता है कि आम की उत्पत्ति दक्षिण-पूर्व एशिया और भारत में हुई, जहां 4000 वर्ष ईसा पूर्व हिंदू ग्रंथों में इस फल का उल्लेख मिलता है। बौद्ध भिक्षु भी इस फल की खेती करते थे। प्राचीन काल में बौद्ध भिक्षुओं और बाद में व्यापारियों तथा विदेशी यात्रियों के माध्यम से आम दक्षिण-पूर्व एशिया, मध्य पूर्व, अफ्रीका और अंततः दक्षिण अमेरिका तक पहुंचा।